ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-पौष-माघ संवत् 2071
जनवरी 2015

अंक 114, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

छत्तीसगढ़ के महासमुन्द जिले के विभिन्न स्कूलों व ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पन्न
योग साधना चिकित्सा एवं चरित्र निर्माण शिविर की झलकियाँ

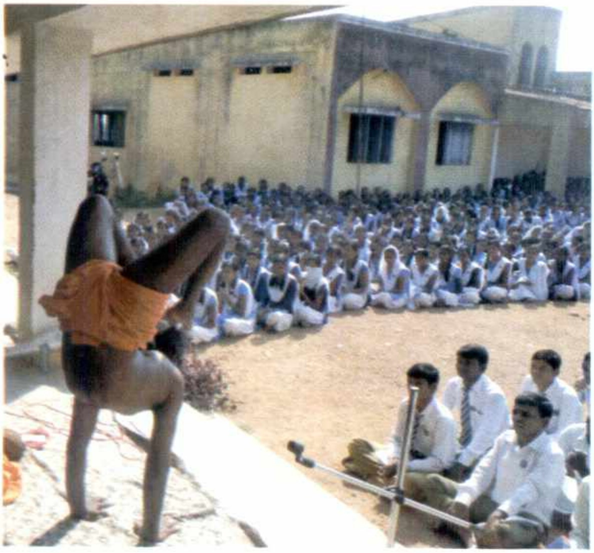

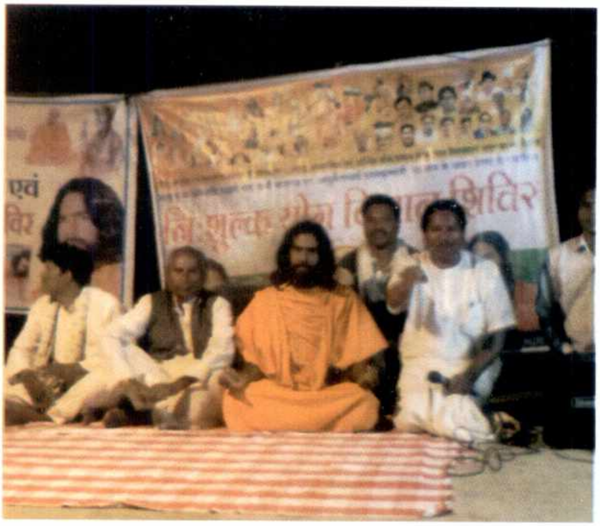

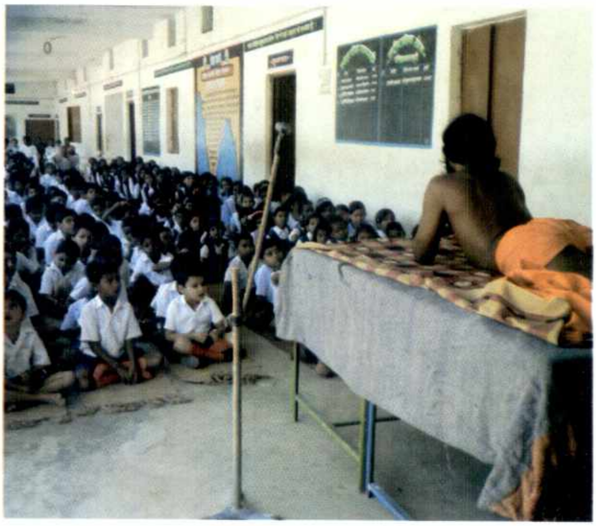

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष - १०, अंक ७ ओ३म् मास/सन् - जनवरी - २०१५

विक्रमी संवत् - २०७१
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११५
दयानन्दाब्द - १९१

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

पृष्ठ क्र.

१.	वेदामृत : तेरी शरण	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : चरित्र निर्माण ही शिक्षा का ध्येय होना चाहिए .	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	वैदिक ज्ञान द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन	बिग्रेडियर चितरंजन सांवत	०८
४.	विश्व संगठन के वैदिक आधार- मैत्री और समता	स्व. उमाकान्त उपाध्याय	१०
५.	स्वामी दयानन्द को वेदों की प्राप्ति कब, कहां व किससे हुई ?	मनमोहन कुमार आर्य	१२
६.	अनेक पर्वों का पुञ्ज-मकर संक्रान्ति पर्व	ले. मनुदेव अभय	१६
७.	चल चित्रों की सफाई	डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह	१८
८.	क्या १जनवरी नवर्ष है ?	डॉ. दिव्येश्वर शास्त्री	२०
९.	जीवन का सम्मान	प्रो. सुभाषचन्द्र	२२
१०.	भोजन एवं स्वास्थ्य रक्षा	पं. वासुदेव व्रती	२४
११.	लौह पुरुष : स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी	स्वामी सदानन्द सरस्वती	२६
१२.	लाजपत पंजाब के शेर-ए-बब्बर	लोचन शास्त्री	२८
१३.	होमियोपैथी से वाइरल संक्रमण, खसरा, छोटी माता, कर्णमूल रोगों का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२९
१२.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

तेरी शरण

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

उपच्छायामिव घृणे, अगन्म शर्म ते वयम्।
अग्ने हिरण्यसन्दृशः॥ ऋग्. ६.१६.३८

ऋषिः **बार्हस्पत्यः भरद्वाजः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **गायत्री**।

● **(अग्ने)** हे अग्रणी परमात्मन्! **(छायाम् इव)** जैसे कोई छाया में (पहुंचा है) वैसे ही **(ते)** तुझ **(हिरण्यसन्दृशः)** हिरण्यसदृश और **(घृणेः)** ज्योतिर्मय की **(शर्म)** शरण में **(वयं)** हम **(उप अगन्म)** पहुंच गये हैं।

● जब मनुष्य धूप से व्याकुल हो रहा होता है, शरीर से पसीने की धारें चू रही होती हैं, ताप से सिर फटा जाता है, तब वह किसी तरु की शीतल छाया में पहुंचना चाहता है। छाया पाकर उसे जो विश्राम मिलता है, उससे वह अपना सब दुःख भूल जाता है। ऐसी ही अवस्था आज हमारी हो रही है। हम सांसारिक तापों से ऐसे संतप्त, क्लान्त और उद्विग्न हो रहे हैं कि छाया पाये बिना चैन नहीं पड़ रहा है। पर जाये तो किस छाया में जायें ? घने-से-घने वृक्ष या बड़े-से-बड़े भवन आदि की छाया इस सांसारिक ताप को नहीं मिटा सकती। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश आदि के क्लेशों से संतप्त जन को कोई भौतिक छाया कैसे शान्ति दे सकती है ? हे जगत्पति ! हे ईशो के ईश ! तुम्हारी ही छाया हमारे सन्तापों को हर सकती है। अतः हम तुम्हारी शरण में आ रहे हैं। पर तुम तो 'अग्नि' हो, अग्नि से तो ज्वालाएं निकलती है। हम संतप्तों को यदि तुम्हारी ज्वालाओं ने घेर लिया, तो क्या और भी अधिक हम आग में नहीं झुलसने लग जायेंगे ? नहीं, यद्यपि तुम अग्नि हो, 'घृणि' हो, जाज्वल्यमान हो, तो भी शरणागतो को जलाते नहीं, अपितु उनके ताप को ही भस्म करते हो। तुम 'हिरण्यसन्दृश' हो, सुवर्ण-सदृश तेज वाले हो। हिरण्य यद्यपि आग्नेय है, पर उसका तेज धारणकर्ता को दग्ध नहीं करता, प्रत्युत मनोमोहक और शरीर को शान्ति देने वाला होता है। इसी प्रकार तुम अग्निमय, देदीप्यमान एवं हिरण्यसंदृश की छत्रछाया और शरण सन्तापों से हमारा उद्धार ही करती हो। यदि भूल से हम किसी सीलन-भरी एवं मलिन आसु छाया में पहुंच गये, तो सन्ताप तो हमारे क्या ही मिटेंगे, उल्टे हमें किन्ही नवीन आधि-व्याधियों से ग्रस्त हो जाने का भय है।

हे शरणागतो के त्राता ! हम अपनी ओर से तुम्हारी शरण में आ ही रहे हैं, तुम भी हमें अपनी शरण में ले लो और हमारे सब सन्तापों को हरकर हमें दिव्य आनन्द प्रदान कर दो।

संस्कृतार्थ :- १. घृणिः प्रज्वलित (निघं १.१७), २. शर्म शरणम्। (निरु. ९.१९)

सम्पादकीय

चरित्र निर्माण ही शिक्षा का ध्येय होना चाहिए

विद्यार्थी की दिशाहीन विनाशात्मक भूमिका समाज के समक्ष अनेक बार चुनौती बन चुकी है। भावावेश में उसने कई बार दीर्घावधिक हड़तालें करवाई है, चलती रेलगाड़ियों को रुकवाया है, पौं-पौं करती बसों को आग लगाई है तथा गगनचुम्बी महलों को घिरा कर धराशायी किया है। आज भी कतिपय विचारक उन नृशंस घटनाओं की पुनरावृत्ति की कल्पना से चिन्तित हो उठते हैं। वे विनाश की इस पृष्ठभूमि के पीछे सदैव राजनीतिक कारणों की उपस्थिति मानते हैं। उनके विचार में कुछ सत्तालोलुप राजनीतिज्ञ अपने तुच्छ स्वार्थों की सिद्धि के लिये विद्यार्थियों का दुरुपयोग करते हैं, जिससे विद्यार्थियों में उच्छङ्खलता एवं अनुशासनहीनता का वातावरण उत्पन्न हो जाता है, जिनका पर्यवसान आन्दोलन में होता है। विद्यार्थी का लक्ष्य टूट जाता है, चरित्र गिर जाता है और लक्ष्यभ्रष्ट विद्यार्थी अपनी सार्थकता खो देता है। यद्यपि हम सामयिक संदर्भ में उनके राजनैतिक हस्तक्षेप सम्बन्धी कथन की संभावनाओं से प्रत्याख्यान नहीं कर सकते, तथापि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उनका मत स्वयं ही खण्डित हो जाता है, क्योंकि प्रत्येक आन्दोलन किसी परिस्थिति विशेष की देन होता है और उसकी तत्सम्बन्धी तत्कालीन दशाओं में ही उचित मीमांसा की जा सकती है। महर्षि वाल्मीकि के अन्तेवासी ऋषिकुमारों ने कुश के नेतृत्व में राम-सेना से युद्ध किया, तो वहां न तो कोई राजनैतिक कारण था और न ही को राजनैतिक प्रोत्साहन था। भोले-भाले ऋषिकुमारों ने अश्वमेध-यज्ञ के घोड़े को पकड़ लिया था, तथा खेल-खेल में ही युद्ध विभीषिका उत्पन्न हो गई थी। इससे न तो वे उद्दण्ड कहलाये और न ही उनके नाम की सार्थकता बिगड़ी।

इस विषय में हमारा मत है कि आज के विद्यार्थी ने सार्थकता तो परम्परागत अनुशासन एवं वेदविहित आचरण को भंग करके खोई है, जिनके कारण गुरु भक्त आरुणि और उपमन्यु इतिहास पटल पर अमर हुए थे। उपमन्यु ने महर्षि धौम्य के कठोर दण्ड के फलस्वरुप भिक्षा से आया हुआ अन्न भी खाना छोड़ दिया था। अनन्तर गुरु के आदेश से बछड़ों के मुख से गिरे हुए दूध के फेन भी चाटने बन्द कर दिये थे। तब एक दिन भूख से व्याकुल होकर उसने आक के दूध का पान कर लिया और अन्धा हो कर कुएं में गिर पड़ा था। गुरु ने उसे कुएं से बाहर निकाला और दिव्यचक्षु प्रदान किये। ऐसी ही कथा आरुणि की है कि उसने मूसलाधार वर्षा में रात भर खेत की टूटी हुई मेड़ पर लेट कर पानी के बहाव को रोकने का प्रयत्न किया था। दूसरे दिन की प्रातः गुरु ने शिष्य को खेत की टूटी हुई मेड़ से स्वयं उठाया था और अपने आशीर्वाद से सभी विद्यार्थी का उसमें आधान कर दिया था। इसी लिये मनुस्मृति (२.२१८) में कहा गया है कि -

यया खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति। तथा गुमगतां विद्यां शुश्रूधुरधिगच्छति॥

जिस प्रकार फावड़े से भूमि को खोदता हुआ पुरुष जल को पा लेता है, उसी प्रकार सेवा करने वाला (विद्यार्थी) गुरु की विद्या को पा लेता है।

अन्तेवासी आरुणि और उपमन्यु अनुशासन एवं सदाचार की कसौटी पर पूर्ण उतरे थे तथा गुरुजनों ने भी उन्हें अद्‌भुत ज्ञान-गरिमा का भण्डार सौंप दिया था। उन्होंने गुरु के आदेशों की अवहेलना नहीं की थी। यदि वे ऐसा करते, तो लोकपरिवाद का विषय भी बनते और विद्या की प्राप्ति भी न कर पाते, क्योंकि शासन की भट्‌ठी में पके बिना कोई भी शिष्य गुरु से विद्या ग्रहण नहीं कर सकता। महाभारत (५,४०,४) में भी कहा गया है कि **अदुश्रुषा त्वरा श्लाघा शत्रस्त्रयः ॥** सेवा का अभाव, उतावलापन और आत्मप्रशंसा - ये तीन विद्या के शत्रु हैं। पुनश्च, वे अवहेलना करते ही क्यों ? उन्हें तो गुरु ने दीक्षित किया था। मनुस्मृति कहती है -

य आवृणोत्यवितयं ब्रह्मणा श्रवणावृ भौ । स माता स पिता ज्ञेयस्तं न द्रुह्योकदाचन ॥ (मनु. २,१४४)

जो विद्या से दोनों कानों को उचितरीत्या भरता है, उसको माता-पिता समझना चाहिये। उससे कभी द्रोह न करें। क्योंकि **उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान् ब्रह्मवः पिता । ब्रह्मजन्म हि विप्रस्य प्रेत्य चेह च शाश्वतम् ॥** (मनु. २.१४६) उत्पन्न करने वाला और वेद पढ़ाने वाला, ये दोनों ही पिता है। उनमें आचार्य पिता से श्रेष्ठ है, क्योंकि विद्वान् पुरुष का विद्याजन्म ही इहलोक तथा परलोक में स्थित होता है। अतएव - **आचार्यदेवो भव । अतिथि देवो भव । यान्यनवद्यानि कर्माणि । तानि सेवितव्यानि । नो इतराणि । यान्यस्माकं सुचरितानि । तानि त्वयोपास्यानि । नो इतराणि ॥** (तैत्तिरीयोपनिषद् १,११,२) अर्थात् तुम आचार्य में देव-बुद्धि रखने वाले बनो, अतिथि को देवतुल्य समझने वालो होवो। जो-जो निर्दोष कर्म हैं, उन्हीं का तुम्हें सेवन करना चाहिये, दूसरे कर्मों का कभी आचरण नहीं करना चाहिये। हमारे आचरणों में भी जो-जो अच्छे आचरण है, उनका ही तुमको आचरण करना चाहिये, दूसरों का नहीं।

कई आलोचक हम से पूछते हैं कि भगवन् परशुराम ने भीष्म का युद्ध क्यों नहीं हुआ ? भीष्म को चाहिये था कि वे अपने गुरुं परशुराम की आज्ञा को शिरोधार्य करने तथा काशिराज-तनया अम्बा का पाणिग्रहण कर लेते। किन्तु गुरु के बारम्बार समझाने पर भी अपने हठ पर अडिग रहे और युद्ध किया। इसमें हमारा कथन हैकि भीष्म ने भगवान् परशुराम से धर्म-युद्ध किया था तथा कोई आदेशावहेलना नहीं की थी। युद्ध से पूर्व, पश्चात् तथा बीच में भी वे गुरु-स्तुति करते रहे थे। इस प्रकार उन्होंने आद्योपान्त भगवान् परशुराम को उचित सत्कार दिया था, ऐसा महाभारत के अध्येता जानते हैं। यदि वे गुरु के तिरस्कार करते, तो त्रिशंकु की तरह आकास में ही लटके रहना पड़ता। अब कोई आक्षेप करते हैं कि आपका यह विवेचन उस समय का है कि माता-पिता अपनी सन्तान को विद्या ग्रहण करने के लिये गुरुकुलों में भेजते थे तथा शिष्यों को गुरु के पास रह कर ही विद्या ग्रहण करनी पड़ती थी और विद्याध्ययन काल में विद्यार्थी अपने घर से दूर रहता था। किन्तु आज ये सभी बातें असंभव है। अतएव यह पद्धति समयानुसार नहीं है, तथा व्यावहारिक भी नहीं है।

हमारा मत है कि प्रतिपक्षी का कथन सर्वथा अन्तर्गत एवं युक्ति-विरुद्ध तथा अनुभव के विपरीत है, क्योंकि घर से दूर रह कर गुरुकुल में ही एकान्तचित्त होकर विद्याध्ययन किया जा सकता है। घर में रह कर तो विषयों की ओर स्वाभाविक रुप से आकर्षित होने वाली इन्द्रियां मन को दूषित कर देती है तथा मन के विषय-सुख में रमने के पश्चात् अध्ययन होना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि तब सुखार्थी बन जाता है।

महाभारत (५,४०,६) में कहा गया है कि - **सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम् ।**

सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ।। अर्थात् सुख चाहने वाले को विद्या कहां से मिल सकती है ? विद्या चाहने वाले को सुख नहीं है। सुख की चाह को, तो विद्या को छोड़े और विद्या की चाह हो, तो सुख का परित्याग करें। यदि विद्यार्थी विषय-सुख के समीप रहेगा, तो उससे विद्या में व्यवधान करने वाले दोष उत्पन्न हो जाएंगे, और फिर दोष उत्पन्न होने पर विद्यार्थी विद्या ग्रहण करने में असमर्थ रहेगा। महाभारत (५,४०,५) में धृतराष्ट्र को उपदेश देते हुए विदुर जी ने कहा है कि -

आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठिरेव च। स्तब्धता चाभिमानित्वं तथा त्यागित्वमेव च।
एते वै सप्मत दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ।।

आलस्य, मद-मोह, चंचलता, गोष्ठी, उद्‌दण्डता, अभिमान और स्वार्थत्याग का अभाव- ये सात विद्यार्थियों के लिये सदा ही दोष माने गए हैं। अब वहां तक व्यावहारिकता का पक्ष है, उसमें हमारा तर्क है कि चारित्र्य-निर्माण के लिए चरित्र निर्माण शालाओं का होना भी अत्यन्त आवश्यक है। अव्यावहारिक बताने वालों की दृष्टि आधिभौतिक युग पर टिकी है, वे अर्थ-सर्वस्व है, चरित्र-सर्वस्व नहीं है। आज की पाठशालाएं तो मधुशालाओं में परिवर्तित हो रही हैं, जहां कि विद्यार्थी शिक्षक के सामने अकड़ने में ही स्वयं को चन्द्रशेखर आजाद और शहीद भगतसिंह बनाना चाहता है।

गुरु भक्त आरुणि और उपमन्यु उसके लिए इतिहास की घटनाएं बन गई है, महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द उसके लिए काल्पनिक पुरुष हैं, एकलव्य पर उसे विश्वास नहीं होता कि उसने कभी अपने दाहिने हाथ का अंगूठा भी काट कर दिया होगा। वह तो दुर्व्यसनों का शिकार है, फिल्म अभिनेता और अभिनेत्रियों की चुस्त पोशाकें और नजाकतें उसके लिए आकर्षण बिन्दु है, उसका अधिक समय उन्हीं की अनुकृति करने में जाता है। करे भी क्या? उसे हितोपदेश देने वाला कोई नहीं है, उसे तो पाठ्यक्रम में नाना विषयों के रुप में चार्वाक-सर्वदर्शन-संग्रह ही पढ़ाया जा रहा है - उन दर्शन में सदाचार की शिक्षा कहां ? तब सदाचार के बिना विद्या कहां ? और विद्या के बिना मनुष्य कहां ? **विद्याविहीनः पशुः** (भर्तृहरि)। सदाचार से रहित मनुष्य को विद्यालाभ नहीं होता। मनुस्मृति (१,१०,९) में भी कहा गया है कि -

अचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते। आचारेम तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत् ।।

आचार से रहित ब्रह्मचारी वेद के फल को नहीं प्राप्त होता और आचारयुक्त ब्रह्मचारी सम्पूर्ण फल को पाने वाला होता है। दुराचारी के वेदपाठ, त्याग, यज्ञ, नियम, तप आदि कभी सिद्धि को प्राप्त नहीं होते - **वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च। न विप्रद्रुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कहिंचित् ।।** (मन. २,९७)

अतएव हमारा सिद्धान्त है कि विद्यार्थी को विद्या-अध्ययन के लिये परम्परागत अनुशासन एवं सदाचार के नियम अवश्य ही पालन करने चाहिए, जिनसे विद्यार्थी का चरित्र-निर्माण होता है और यह चरित्र निर्माण गुरु के पास रह कर ही सम्भव है। श्रुति (कठोपनिषद् १,३,१४) में भी कहा गया है कि - **उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्याया दुर्ग पयस्तत्कवयो वदन्ति ।।** उठो, जागो और श्रेष्ठ महापुरुषों को पा कर (उनके पास जाकर) उस तत्व को जान लो, क्योंकि विद्वान् लोग उस तत्वज्ञान के मार्ग को छूरे की तीक्ष्ण की हुई दुस्तर धार के समान अत्यन्त कठिन बतलाते हैं।

- आचार्य कर्मवीर

सामयिक वैदिक ज्ञान द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन

- ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत

सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने वेद ज्ञान मनुष्य मात्र के लिए दिया। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चार ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया है। क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा।

अनेक देशों में वेद ज्ञान का प्रचार हुआ किन्तु समय बीतने के साथ साथ अन्य लोगों ने स्थानीय कहानियां मंत्रों पर थोप दी और अंधविश्वास बढ़ाने लगे। इस कारण वेद पढ़ने वाले आर्यों की संख्या कम होने लगी और अनार्य बढ़ने लगे। दूरित बढ़ने लगा, भद्र का लोप होने लगा। शताब्दियों का अंधकार छाया रहा और राक्षस राज करते रहे हैं। प्रकाश के अभाव में न देवता प्रगति कर सके, न मनुष्य। मनुर्भव के लक्ष्य का लोप होने लगा।

कई शताब्दियों बाद आशा की एक किरण अंधेरी सुरंग के उस पार दिखाई दी। टंकारा सन् १८२४ बालक मूलशंकर का जन्म हुआ। उन्होंने वैदिक विधान बनाने का बीड़ा उठाया और विश्व को आर्य बनाने का संकल्प लिया। मानव मात्र को वेद रुपी अमृत पिलाने के लिए घर बार छोड़ कर निकल पड़े। कहीं सफलता मिली, तो कहीं नहीं मिली। राक्षसी षड़यंत्र में उन्हें विष पान कराया और सन् १८८३ में दीवाली की शाम उनका जीवन दीप बुझ गया। किन्तु असंख्य अन्य दीपों को प्रज्वलित कर गया। राक्षसों को फिर से देवता बनाने का अभियान चला और अनेक दस्यु बने आर्य। नारा आकाश में गुंज उठा -

आज आर्यों के लिए यह चिन्तन की घड़ी है, किन्तु समस्या हमारे सामने है, जिससे आप हम सभी जूझ रहे हैं, समस्या भ्रष्टाचार रुपी राक्षस की। आज हम विचार कर रहे हैं कि क्या वैदिक विधान द्वारा इस राक्षस को सदा के लिए सुला सकते हैं - वैसे ही जैसे राम ने रावण को और कृष्ण ने कंस को चिर निद्रा दी। हम सभी का विचार है कि यह किया जा सकता है। एक बार फिर हम दुरित को दूर करेंगे और भद्र को गले लगाएंगे। प्रश्न है कैसे।

भ्रष्ट आचरण का मूल कारण है, और अधिक धन, स्वर्ण की चमक में, धन की चकाचौंध में सब अपनी आंखों की रोशनी खो रहे हैं अच्छे और बुरे में भेद नहीं कर पा रहे हैं। नैतिकता को ताक पर रख दिया है।

पैसे द्वारा ही सत्ता सुख जिन्हें मिला है - वो उस सुख से वंचित होना नहीं चाहते। और पैसा लगाकर और सत्ता ढूंढ रहे हैं और सत्ता के पाने के बाद अधिकसे अधिक पैसे को ढूंढ रहे हैं। इसी कुचक्र में फंसने के बाद उन्हें जीवन मूल्यों से क्या मतलब। देश का धन विदेशी बैकों में जमा करना, भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा है। जो व्यक्ति इस पर आपत्ति कर सकते हैं वे भी मौन हैं - कोई धृतराष्ट्र समान पुत्र मोह से मौन है तो कोई सरकार के प्रति वफादार करके अपने हाथ कटा बैठा है। इसीलिए, भ्रष्टाचार पनप रहा है। राज कोष से मुद्रा निजी उपयोग के लिए वो लोग निकाल रहे हैं, जिन्हें राज कोष की रक्षा करने का दायित्व दिया गया है। समय के साथ प्रजा निर्बल हो रही है, और राज धर्म कहता है कि यदि प्रजा निर्बल हो रही है तो राज सबल नहीं हो सकता। देश भी पतन की राह पर है। हम धर्म की दुहाई देते हैं किन्तु धर्म का पालन नहीं करते। बड़े बड़े लोग, ऐसी अनैतिक बातों में लिप्त हैं कि वे दूसरों को सीख नहीं दे सकते। यथा राजा तथा प्रजा। आर्थिक स्थिति और बेहतर बनाने के दावे के कुचक्र में फंस कर शासक भ्रष्टाचार के दलदल में और फंसते जा रहे हैं। ये ऐसा कुचक्र है जिसमें अधिक से अधिक लोग फंसते जा रहे हैं - निकलने का मार्ग किसी को पता नहीं। मंत्री और संतरी दोनों ही लूटेरों की भूमिका में राजनीति के रंगमंच पर अपमानित खड़े हैं किन्तु वो अपने आप को और एक दूसरे को सम्मानित करने में जुटे हैं।

विधि विधान पालन :- शताब्दियों से यह कहा जा रहा है कि विधि विधान महिमामय है। कोई व्यक्ति कितना ही महिमा मंडित क्यों न हो, यह विधान से ऊपर नहीं हो सकता। दुर्भाग्य

है कि आज अनेक बड़े बड़े मंत्री जो कानून के पंडित हैं वो अपने शब्दों और कर्मों से कानून की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं। क्या ऐसे लोग भ्रष्टाचार पर लगाम लगा सकते हैं ?

देश को और राज्य को सबल बनाने के लिए, कानून का उल्लंघन करने वालों को दंड देना आवश्यक होता है। यदि चोर डाकू और कातिलों को मंच पर महिमा मंडित किया जाता है तो उन्हें दंड देने का साहस किसे हो सकता है। यदि देश की मर्यादा का मर्दन किया जाता है तो देश नाश को प्राप्त होता है। यदि सामान्य जन निर्बल होते जाएंगे तो जैसा पहले कहा - शासक वर्ग सबल नहीं हो सकता। यदि सभी जन निर्बल है तो क्या देश सबल हो सकता है।

भ्रष्टाचार रोग है - भयानक रोग है - राज योग है। भ्रष्टाचार रूपी दीमक देश को अंदर ही अंदर चाट कर खोखला कर रहा है। और खोखला राष्ट्र असमय ही काल के गाल में समा सकता है। देश के शत्रु श्रृगाल समान उसी घड़ी की प्रतीक्षा में चहुं ओर बैठे हैं।

क्रांतिकारी समाधान :- हर गंभीर समस्या का समाधान क्रांतिकारी होता है। अभी तक हम और आप शारीरिक सुख में अपने को सुखी मान रहे हैं। यह भ्रम है। यदि व्यक्ति और समाज आध्यात्मिक शक्ति को जागृत नहीं करता तो वो मूर्छित अवस्था में रहेगा कि उसे ढोल और नंगाड़े भी जगा नहीं सकते। लेकिन हम और आप जो आर्य समाज के लोग हैं वही तो सोते हुए देश को जगाने आए हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में स्वामी दयानन्द ने जगाया- २१वीं शताब्दी में हम और आप दयानन्द के सैनिक देश को जगाने के लिए कटिबद्ध हैं। इसके लिए हमें सार्वजनिक अभियान चलाना है। पहले तो व्यक्ति अपने आप को आध्यात्मिक शक्ति संपन्न होकर कठिनाईयों से जुझने का संकल्प ले और फिर अनेक व्यक्ति मिलक पूरे समाज को आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाएं और ऊपर उठाएं। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने घर घर में दरवाजोंके अंदर मनाए जारहे गणेशोत्सव को सार्वजनिक रुप दिया। पूरे समाज को एकत्र किया। लाभान्वित हुआ हमारा भारत। उसी प्रकार आज आवश्यकता है कि अनेक व्यक्ति मिलकर पूरे समाज को आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से सबल बनाएं। सोने वालों को जगाएं और संगठन द्वारा नवीन जीवन का संचार करें। संघ शक्ति-संगठन ही अमृत है। आईए हम और आप मिलकर आध्यात्मिक शक्ति और संगठन रूपी बल का अमृत पान करें और भ्रष्टाचार रुपी भयानक राक्षस का अंतिम संस्कार करें। याद रखिए - वैदिक विधान में कर्म और कर्म फल का महत्त्व है। हम अच्छे कर्म करेंगे तो फल अच्छा होगा। यदि हम बबूल का पेड़ बोते रहे तो फिर आम कहां से खा सकते हैं। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि आत्म अनुशासन, आध्यात्मिक शक्ति और स्वच्छ जीवन से जन जन को प्रेरणा देते हुए देश को पुनः सन्मार्ग पर चलाएं। इसी में हमारा, आपका, देश का और मानव मात्र की भलाई है।

पता - वी.एस.एम. उपवन, ६०९, सेक्टर-२९, अरुण विहार, नोएडा-२०१ ३०३

बोध कथा — सांसारिक प्रेम क्या होता है.

एक शिष्य रोज अपने गुरु को कहता था कि मेरे घर वाले मुझे बहुत प्यार करते हैं। एक दिन गुरु ने सोचा इसको सांसारिक प्रेम की असलियत दिखानी चाहिए। उसने शिष्य से कहा कि तुम घर जाकर कहना कि पेट में बहुत दर्द हो रहा है। साथ में यह गोली भी खा लो। इससे तुम्हारा शरीर मृत जैसा हो जाएगा। शिष्य ने ऐसी ही किया और सब ने सोचा कि मर गया है। थोड़ी देर में संत वहां पहुंच गया। सब बहुत रो रहे थे और उन्होने संत से कहा कि इसे वापस जिंदा कर दो। संत बोला - मैं इसको जिंदा कर सकता हूं पर तुममें से किसी को इसकी जिन्दगी के लिए अपनी जिन्दगी देनी होगी। शिष्य की माँ से कहा, तुम्हारा जीवन तो करीब-करीब खत्म हो गया है, तुम क्यों नहीं अपनी जान इसे दे देते। माँ बोली, मैं एक बेटे को जान दे दूंगीतो मेरे बाकी बेटे दुःखी होएंगे। पिता से पूछने पर उन्होने भी ऐसा ही जवाब दिया। उसकी पत्नी कहा, मेरे भाग्य में विधवा होना लिखा है तो उसे कौन बदल सकता है और फिर मुझे बच्चों की देख-रेख भी तो करनी है। उसकी सब संतानों में से एक भी पिता के लिए कुरबान होने को तैयार नहीं था। भक्त यह सब बातचीत सुन रहा था। इस तरह गुरु ने उसकी आसक्ति और मोह का पर्दा हटाया।

विवेचनात्मक

विश्व संगठन के वैदिक आधार - मैत्री और समता

- स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है। डार्बिन के विकासवाद का सिद्धान्त- **'योग्यतम की जीत'**। योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है, जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वहीं संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली का राज होता है। जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल पर राज करते हैं। शेर जंगल का राजा कहा ही जाता है। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है।

पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है, किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिये उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा। मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है। सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है - **"अश्रद्धा मनृत्येदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।"**

अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दुष्टता इत्यादि को देखा और सत्य, करुणा, सज्जनता इत्यादि दोनोंतरह के कार्यों को पाया। वेद का मन्त्र यह कहता हैकि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करुणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार है।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्बिन के सिद्धान्त 'योग्यतम की जीत' के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरी का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार **"उपनिवेशवाद"** को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देशों के उपनिवेश क बनाये। उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने लीग आफ नेशन्स का संगठन किया किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री औड़ समता नहीं था। इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षों में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्व युद्ध का दूसरा नरसंहार का, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागासाकी का एटमबम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त **"संयुक्त राष्ट्र संघ" (यू.एन.ओ.)** का संगठन किया। विश्व युद्ध के कारणों का इतिहास कुछ सुस्पष्ट रुप से सामने था। अतः थोड़ी अधिक सूझ-बूझ, मैत्री और समता दिखायी पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी। यह सभी संगठन थोड़े, अधिक मैत्री और समानता के आधार पर बने हैं किन्तु सब जगह कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी

बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रुस, चीन का विशेषाधिकार - **वीटो संगठन** को निर्बल बना रहा है। यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं। यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्रायें, रुपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार **"क्रय शक्ति की समानता"**। (पर्चेजिंग पावर पैरिटी) होना चाहिए। यह असमानता की भावना और सुरक्षा परिषद आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएं हैं। ये निर्बलताएं विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती है। वैदिक आदर्शों के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है -

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत ॥

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतंत्र का बहुमत नहीं था। वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्वकल्याण की भावना को प्रश्रय देते हैं। वेद की दृष्टि में भूतमात्र से, प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है -

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें। पक्षी संसार के सभी जीव-जन्तुओं को मैत्री के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझ गया है। पशु सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बने।

संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रों में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, बलशाली राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणा :- वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है - ऋग्वेदका मण्डल-मणि-सूत्र। ऋग्वेद में दस मण्डल है। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की अवधारणा की पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रों में समानता है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का तीसरा मन्त्र विशेष रूप से समानता का उद्घोष करता है -

"ओ समानो मन्त्रः समितिः समानी,
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रभि मन्त्रये वः।
सामनेन वो हविषा जुहोमि ॥"

मन्त्र का संक्षेप भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो। सबके मन व चित्त में समानता हो। सभी राष्ट्रों में चिन्तन और विचार की समानता हो और सारे राष्ट्रों का प्राप्तव्य समानता के आधार पर हो। यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है।

पता : ईशावास्यम्, पी-३०, कालिन्दी हाऊसिंग एस्टेट, कोलकाता-७०००८९

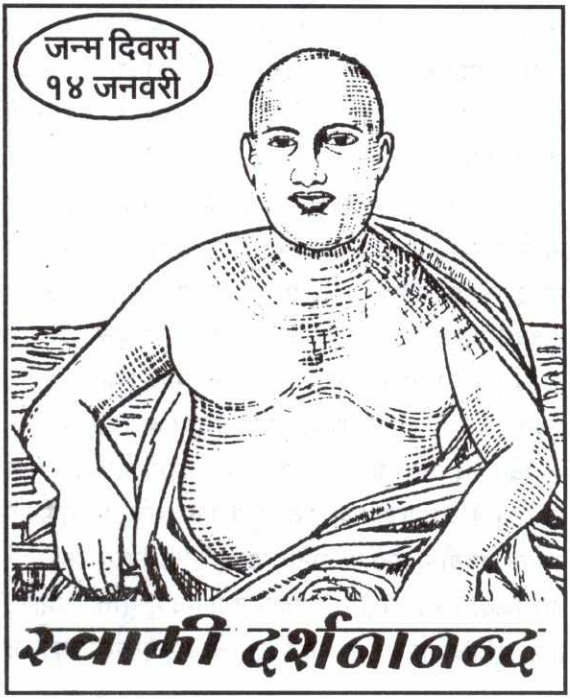

स्वामी दयानन्द को वेदों की प्राप्ति कब, कहां व किससे हुई ?

वैचारिक

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को वेदों की उपलब्धि कब, कहां, व किससे हुए, यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है। हम पुनः इस विषय में विचार कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वरीय ज्ञान, सब सत्य विद्याओं का पुस्तक, धर्म का आदि स्रोत एवं धर्म विषय में परम प्रमाण मानते थे और वेदों का अध्ययन, इनका पढ़ना-पढ़ाना, सुनना व सुनाने को सब मनुष्यों का परम धर्म मानते थे। वस्तुतः यह बात सर्वांश में सत्य है परन्तु अति पवित्र हृय वाले धर्मात्मा व सत्य के प्रेमी तथा धार्मिक साहित्य के तुलनात्मक अध्येता व गवेषक ही इसमें निहित रहस्य को समझ सकते हैं। स्वामी जी ने सन् १८७५ व कुछ समय बाद वेदों का संस्कृत व हिन्दी में भाष्य करना आरम्भ किया था। इसका कारण वेदों के नाम पर सदियों से प्रचारित व प्रसारित मिथ्या मान्यताओं का खण्डन एवं सत्य वेदार्थ का प्रकाश करना था। प्राचीन वैदिक साहित्य एवं महाभारतोत्तर कालीन समस्त धार्मिक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करने पर इस तथ्य की पुष्टि होती है कि यथार्थ वेदार्थ संसार में कहीं उपलब्ध नहीं था।

अतः इस महनीय कार्य को उन्होंने प्रमुखता दी और अपने व्यस्त जीवन में इस कार्य को योजनाबद्ध रुप से करते हुए इसके लिए सभी सुख सुविधाओं का त्यग कर अपूर्व पुरुषार्थ किया। ३० अक्टूबर १८८३ ई. को मृत्यु तक वह यजुर्वेद का भाष्य पूर्ण कर चुके थे तथा ऋग्वेद के मण्डल ७ सूक्त ६१ मन्त्र २ तक का भाष्य कर लिया था। शेष ऋग्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का भाष्य करना अभी शेष था। मृत्यु हो जाने के कारण शेष कार्य वह पूर्ण न कर सके, परन्तु उनके अनेक शिष्यों ने वेदों पर अनेक भाष्य लिख कर इस कार्य को पूरा किया। चार वेदों को महर्षि दयानन्द ने युक्ति, प्रमाण, तर्क, सृष्टिकर्मानुरुप, ज्ञान व विज्ञान के आधार पर सत्य सिद्ध किया, जिससे वह संसार की समस्त मानवजाति के लिए परम प्रमाण सिद्ध हुए। यही कारण था कि संसार का उपकार करनने के लिए उन्होंने वेद की सत्य के विरुद्ध मान्यताओं का खण्डन किया और वेद विरोधी मत, सम्प्रदायों, धार्मिक संगठनों को शास्त्रार्थ व शंका-समाधान करने की चुनौती दी और इसके परिणामस्वरुप चार वेद की सर्वत्र सत्य व प्रमाणिक सिद्ध हुए।

महर्षि दयानन्द को यह चार वेद मन्त्र संहितायें कब, कहां व किससे प्राप्त हुई थी ? इस प्रश्न पर विचार करते हैं। इसके दो सम्भावित उत्तर हैं, पहला यह कि उन्होंने प्रो. मैक्समूलर द्वारा सन् १८५६ में प्रकाशित ऋग्वेद भाष्य व अन्य पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रकाशित इतर वेदों के भाष्य इंग्लैण्ड से मंगाये थे। उनके उपलब्ध पत्रादि साहित्य में इन्हें मांगलने का उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु यह महर्षि दयानन्द के पास सन् १८८३ में मृत्यु के समय उपलब्ध थे, वा इनके भाष्य व लेखों में इन सबका उल्लेख मिलता है। अतः उन्होंने इन्हें अवश्य ही इंग्लैण्ड से स्वयं या अपने किसी अनुयायी के सहयोग से मंगाया होगा, ऐसा अनुमान होता है।

दूसरी सम्भावना यह है कि उन्होंने अपने गृह त्याग के बाद से ही देश के अनेक भागों में जा-जाकर अनेक ग्रन्थों को खोज कर पढ़ा था। इस कारण उनको यह ज्ञान था कि देश के किन-किन स्थान से पुस्तकालयों और व्यक्ति विशेषों के पास कौन-कौन से ग्रन्थ उपलब्ध हैं। अतः आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने उन ज्ञात स्थानों में जाकर वेदों को प्राप्त किया होगा, ऐसा होना सम्भव है। सन् १८६७ से पूर्व उन्हें चारों वेदों की उपलब्ध हो चुकी थी, ऐसा पं. लेखराम कृत उनके वृहत एवं खोजपूर्ण जीवन चरित्र से विदित होता है। हम यहां इससे जुड़ी दो घटनायें प्रस्तुत करते हैं।

यह घटना सन् १८६४ की है जिसका शीर्षक है वेदों की खोज में धौलपुर की ओर प्रस्थान - एक दिन स्वामी जी ने पंडित सुन्दरलाल जी से कहा कि कहीं से वेद की पुस्तक लानी चाहिए। सुन्दरलाल जी बड़ी-खोज करने के पश्चात् पंडित चेतोलाल जी और कालिदास जी से कुछ पत्र वेद के लाये। स्वामी जी ने उन पत्रों को देखकर कहा कि यह थोड़े हैं, इनसे कुछ काम न निकलेगा। हम बाहर जाकर कहीं से मांग लावेंगे। आगरा में ठहरने की अवस्था में स्वामी जी समय-समय पर पत्र द्वारा अथवा स्वयं मिलकर विरजान्द जी से अपने सन्देह निवृत्त कर लिया करते थे। इस विवरण से यह ज्ञात होता है कि उन दिनों स्वामीजी के पास लन्दन में प्रकासित जिन्हें किम्वदन्ती के रुप में जर्मनी वाले वेद कहा जाता था, नहीं थे। इससे यह भी पता चलता है कि देश में वेदों की उपलब्धि थी, उसके स्थान के बारे में सम्भवतः स्वामीजी को ज्ञान था, तभी उन्होंने कहा कि हम बाहर जाकर कहीं से मांग लावेंगे।

पं. लेखराम रचित जीवन चरित्र में सन् १८६७ की यह दूसरी घटना भी दी गई है। शीर्षक है कि "उन्हें केवल वेद ही मान्य थे-स्वामी महानन्द सरस्वती, जो उस समय दादूपंथ में थे-इस कुम्भ पर (स्वामी महानन्द) स्वामी जी से मिले। उनकी संस्कृत की अच्छी योग्यता है। वह कहते हैं कि स्वामी जी ने उस समय रुद्राक्ष की माला, जिसमें एक-एक बिल्लौर या स्फटिक का दाना पड़ा हुआ था, पहनी हुई थी, परन्तु धार्मिक रुप में नहीं। **हमने वेदों के दर्शन, वहां स्वामी जी के पास किये, उससे पहले वेद नहीं देखे थे।** हम बहुत प्रसन्न हुए कि आप वेद का अर्थ जानते हैं। उस समय स्वामीजी वेदों के अतिरिक्त किसी को (स्वतः प्रमाण) न मानते थे।" इस प्रमाण से यह स्पष्ट है कि सन् १८६७ व उससे पहले से स्वामी जी के पास वेद उपलब्ध थे। हम यह भी बताना चाहते हैं कि स्वामी महानन्द सरस्वती देहरादून में रहते थे। स्वामी दयानन्द जी से मिलने के बाद उन्होंने देहरादून स्थिति अपने **"महानन्द आश्रम"** को **"महानन्द आश्रम अर्थात् आर्यसमाज"** का नाम दिया था। हम इसी आर्यसमाज के सदस्य रहे हैं। आज यह आर्यसमाज धामावाला देहरादून के नाम से विद्यमान है। अब यह कहना कठिन है कि स्वामी महानन्द जी ने स्वामी दयानन्द जी के पास जो वेद देखे वह प्रस्तुत चारों वेद थे अथवा कुछ कम थे। यह इंग्लैण्ड में प्रो. मैक्समूलर व अन्य द्वारा प्रकाशित थे या भारत में उपलब्ध हस्त-लिखित थे। जो भी हो स्वामी जी के पास सन् १८६७ में वेद थे और वह चारों वेद थे, यही अनुमान कर सकते हैं। यदि यह वेद हस्त-लिखित थे, जो कि इस आधार पर सम्भव है क्योंकि स्वामी जी ने धौलपुर में सुन्दरलाल जी को कहा था कि हम बाहर जाकर मांग लायेंगे। यह देश में प्राप्त वेद कौन-कौन से कहां व किससे कब प्राप्त हुए, इसका विवरण अज्ञात है।

२ नवम्बर २०१४ को हरिद्वार में वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान् वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार की जन्मशती समारोह मनाया गया। इस अवसर पर **"श्रुति-मंथन"** नाम से एक स्मृति ग्रन्थ का लोकार्पण भी हुआ। इस ग्रन्थ में हमारे प्रश्नों से मिलते-जुलते कुछ प्रश्नों को लेकर आचार्य रामनाथ वेदालंकार का डॉ. भवानीलाल भारतीय तथा पं. युधिष्ठिर मीमांसक से पत्राचार दिया गया है। डॉ. भवानीलाल भारतीय द्वारा आचार्य रामनाथ वेदालंकार को उनके पत्र के उत्तर में दिनांक १०-९-१९८७ को प्रेषित पत्र में कहा गया है कि स्वामी दयानन्द द्वारा भारत में जर्मनी से वेद मंगाने की बात एक किंवदन्ती या प्रवाद मात्र है। स्वामी जी के कार्य क्षेत्र में उतरने से पूर्व प्रो. मैक्समूलर ने आक्सफोर्ड (इंग्लैण्ड) से ऋग्वेद संहिता तथा उसके सायण भाष्य का सम्पादन व प्रकाशन किया था। इसके लिये उसे ईस्ट इंडिया कम्पनी से आर्थिक सहायता मिली थी। १८५६ का छपा यह संस्करण स्वामीजी के निजी पुस्तक संग्रह में था और आज भी अजमेर (परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय में) उपलब्ध है। इसे ही स्वामीजी ने इंग्लैंड से मंगाया होगा। क्योंकि मैक्समूलर जर्मन था और उसी ने उक्त संस्करण का सम्पादन किया, अतः यह प्रवाद प्रचलित हो गया कि स्वामी जी ने वेद जर्मनी से मंगाये थे। चारों वेद स्वामी जी ने विदेश से नहीं मंगाये। यजुर्वेद और सामवेद तो उन्हें भारत में मिल गये होंगे। अथर्ववेद का एक अमेरिका में प्रकाशत संस्करण स्वामीजी को उनके गुजराती भक्त मथुरादास लवजी ने भेंट किया था। (अमेरिका में अथर्ववेद प्रकाशित हुआ यह हमने

इस पत्राचार से पहली पार जाना है) यह पुस्तक भी परोपकारिणी सभा के संग्रह में है। स्वामी जी ने किसी मूल संहिता को अपने जीवनकाल में मुद्रित नहीं कराया। यह कथा पूर्णतया गलत है कि उन्होंने चारों वेद भारत के बाहर से मंगा कर मुद्रित कराये। वैदिक यन्त्रालय से चारों संहिताएं छपी हैं, किन्तु यह स्वामी जी के निधन के बाद में छपी। डॉ. भवानीलाल भारतीय के इस कथन कि चारों वेद स्वामी जी ने विदेश से नहीं मंगाये, (केवल प्रो. मैक्समूलर द्वारा प्रकाशित ऋग्वेद ही मंगाया) यजुर्वेद और सामवेद तो उन्हें भारत में ही मिल गये होंगे, हमें लगता है कि डॉ. भारतीय के शोधार्थी एवं शोधार्थियों के निदेशक रहने के कारण उनका कथन सत्य की कोटि में आता है।

डॉ. भवानीलाल भारतीय ने उक्त जानकारी देने के साथ डॉ. रामनाथ वेदालंकार जी को शेष जानकारी वेद और आर्य साहित्य के प्रसिद्ध गवेषक पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी से प्राप्त करने का परामर्श दिया। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी को २ अक्टूबर १९८७ लिखा - अंजमेर से चारों वेद संवत् १९५५ और १९५६ (सन् १८९९ व २०००) के आसपास छपे हैं। उससे पहले पं. गुरुदत्त जी ने चारों वेद विरजानन्द प्रेस लाहौर से छपवाये थे (संत् १९४८ वा सन् १८९२ ई. में ऋग्वेद व शेष वेद सम्भवतः उसके बाद) ... अथर्ववेद के सम्बन्ध में जहां तक मेरी स्मृति है (यह संस्करण हमारे पास अर्थात् पं. मीमांसक जी के पास नहीं है) शंकर पांडुरंग द्वारा छपवाये गये सायण भाष्य के आधार पर मन्त्र पाठ छपा है। .... अजमेर की ऋग् और यजुर्वेद संहिताएं निश्चय ही पं. गुरुदत्त जी के संस्करणों पर आधृत है।... **जहां तक यह प्रवाद है कि ऋषि दयानन्द ने चारों वेद जर्मनी से मंगाये थे, इसमें इतनी सच्चाई है कि उस समय तक भारतवर्ष में वेदों का प्रकाशन नहीं हुआ था। चारों वेद प्रथम बार यूरोप में छपे थे और स्वामी जी ने उन्हीं संस्करणों का आश्रय लिया था।**

अथर्ववेद के उद्धरण राथ ह्विटनी के संस्करण से ही ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में दिये हैं। राथ ह्विटनी के संस्करण में २०वां काण्ड नहीं छपा था। ऋषि दयानन्द के हस्तलेख संग्रह में अथर्ववेद के २-३ हस्तलेख विद्यमान थे। यूरोप से सामवेद के संभवतः २ संस्करण छपे थे।

डॉ. भारतीय और पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के पत्रों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द ने इंग्लैण्ड से आक्सफोर्ड द्वारा प्रकाशिथ प्रो. मैक्समूलर द्वारा प्रकाशिथ ऋग्वेद व इसके सायण भाष्य को मंगाया था। अन्य विदेशी विद्वानों के इतर तीन वेद वा उनके भाष्य सन् १८६९ से पूर्व प्रकाशित हुये थे या नहीं, इसका प्रमाणिक उत्तर उपलब्ध नहीं होता। यदि वहां अन्य तीन वेद व उनके भाष्य उपलब्ध रहे होंगे तो उन्हें मंगाये जाने का अनुमान किया जा सकता है। यह वेद कब-कब, कैसे प्राप्त किये गये, इसकी जाननकारी भी उपलब्ध नहीं है, परन्तु इन ग्रन्थों की स्वामी दयानन्द के साहित्य में उपलब्धता अथवा उल्लेख इनको यथासमय मंगाये जाने का प्रमाण है। उपर्युक्त पत्राचार से यह भी ज्ञात होता है कि स्वामी जी को भारत में भी यत्र-तत्र वेदों की पूर्ण-अपूर्ण हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हुई थी। इन हस्त लिखित वेद की प्रतियों की प्राप्ति का स्रोत परोपकरिणी सभा द्वारा स्वामी जी की मृत्यु के अवसर पर उपलब्ध साहित्य का विवरण प्रकाशित न किये जाने के कारण सुलभ नहीं है। एतदर्थ हमने एक पत्र परोपकारिणी सभा को ई-मेल भी किया परन्तु वहां उसकी अनदेखी की गई। कारण कुछ भी हो सकते हैं। यदि उनकी इच्छा होती तो विगत १३१ वर्षों में वह महर्षि दयानन्द के पास उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थों, पाण्डुलिपियों व मुद्रित ग्रन्थों का विवरण प्रकाशित कर सकते थे। हमारा अनुमान है कि हमने महर्षि दयानन्द के विस्तृत साहित्य में कहीं पढ़ा है कि स्वामी जी की ३० अक्टूबर सन् १८८३ को अजमेर में मृत्यु होने पर परोपकारिणी सभा के तत्कालीन मंत्री श्री मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या ने उनके सभी ग्रन्थों की सूची तैयार की थी। यदि वह सभा के अभिलेख में उपलब्ध है तो उसका प्रकाशन होना चाहिए, इसकी हम सभा से मांग करते हैं।

यहां हम कुछ चर्चा इस बात की भी कर लेते हैं कि महर्षि दयानन्द ने नवम्बर १८६९ से पूर्व कई बार काशी के विद्वानों को मूर्ति पूजा को वेदों से सिद्ध करने की चुनौती दी थी। अन्ततः नवम्बर १८६९ में शास्त्रार्थ हुआ था। यहां यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या काशी के पंडितों के पास चार

वेद थे। यदि नहीं थे तो उन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि उनके पास वेद नहीं है, शास्त्रार्थ से पहले स्वामी दयानन्द उन्हें वेद उपलब्ध करायें। इसका निष्कर्ष तो यही निकलता है कि उनके पास चार वेद थे। यह बात अलग है कि उनका अध्ययन-अध्यापन बन्द हो चुका था और सत्य वेदार्थ भी काशी व अन्य किसी सनातन धर्मी पौराणिक पंडित जी को मालूम नहीं थे। यह भी महत्वपूर्ण है कि काशी के पंडित शास्त्रार्थ करने तोआये, परन्तु उन्होंने वेद के किसी मन्त्र को मूर्ति पूजा के समर्थन में प्रस्तुत नहीं किया। इसमें दो बाते सामने आती हैं कि या तो वेद उनके पास थे ही नहीं और यदि थे तो उन्हें किसी भी वेद में मूर्ति पूजा किये जाने का विधान नहीं मिला था।

आज तक भी मूर्ति पूजा के समर्थक पौराणिक विद्वान् वेद का कोई मन्त्र प्रस्तुत नहीं कर सके। मूर्तिपूजा की समर्थक जो भी तर्क व युक्तियां हो सकती है, उन सबको एकत्र कर स्वामी दयानन्द जी ने सन् १८७५ में प्रकाशित अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में प्रबल युक्तियों से खण्डन कर दिया है। अब ऐसी कोई युक्ति भी नहीं है, जिसे मूर्ति पूजा के मण्डन में हमारे पौराणिक भाई प्रस्तुत कर सके।

इन्हीं पंक्तियों के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं। हमें लगता है कि हमारे इस प्रश्न कि महर्षि दयानन्द को चारों वेद वा मंत्र संहितायें कब, कहां, किससे व कैसे प्राप्त हुई का विस्तृत उत्तर मिलना अब सम्भव नहीं है। काश, कि महर्षि दयानन्द की मृत्यु से पूर्व किसी ने उनसे यही प्रश्न किया होता तो महर्षि ने उसका विस्तृत उत्तर दे दिया होता।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

क्रान्तिदूत है आर्यसमाज

क्रान्तिदूत है आर्यसमाज ॥ शान्तिदूत है आर्यसमाज ॥
संस्कृति, वेद, धर्म इकलौता प्रिय-सपूत है आर्यसमाज ॥

❀

अन्यायों को हटाने वाला, अज्ञानों को मिटाने वाला।
अन्धविश्वासों कुरीतियों सब पाखण्डों को जलाने वाला।
ढोंग-धतूरे पल में भगाता सब भय-भूत यह आर्यसमाज ॥

क्रान्तिदूत है आर्यसमाज

बल बुद्धि विकसित करता यह, जन-मन को सुरभित करा यह
दुर्व्यसनों को दूर हटाकर, सद्‌गुण से द्विगुणित करता यह
पाप-ताप भय नसाने वाला, सही भभूत है आर्यसमाज ॥

क्रान्तिदूत है आर्यसमाज

यह है ऋषि की वैदिक-ज्वाला, तर्कों के तीरों की माला।
द्वन्द-द्वेष, अज्ञान-घृणा को, है भेदने वाला यह भाला।
वेदोद्धारक दयानन्द-ऋषि से, प्रसूत यह आर्यसमाज ॥

क्रान्तिदूत है आर्यसमाज

आओ मन में स्थापित कर लें, आर्य-भावना उर में भर लें।
सच्चे ऋषि-अनुयायी कहावें, और मन के अंधेरों से तरलें।
धार्मिक ईश्वर-भत दयालु, पावन पूत है आर्यसमाज ॥

क्रान्तिदूत है आर्यसमाज

जो कुछ इसमें आई नमी है, इसकी नहीं यह हमारी कमी है।
श्रद्धा-निष्ठा-लगन के बदले हममें घृणा अति-फूट रमी है।
"सामवेदी" विद्या-विचार हित, खुली छूट है आर्यसमाज ॥

क्रान्तिदूत है आर्यसमाज

- **सामवेदी** शिक्षाशास्त्री-पुरोहिताचार्य,

"सूचना"

एन.टी.पी.सी. कोरबा (छ.ग.) के विभागीय चिकित्सालय में फार्मेसी ऑफिसर के पद पर विगत ३२ वर्षों से कार्यरत **ओम कुमार आर्य** अब स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (वीआरएस) के पश्चात् **"भजनोपदेशक"** के रुप में सेवायें आर्यजगत् को देने को तत्पर हैं। इच्छुक व्यक्ति संस्थायें निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

ओम मुनि वानप्रस्थी "भजनोपदेशक" **(ओम कुमार आर्य),**

एम.आई.जी. १८१/१२, आवास विकास कालोनी, विवेकानन्द नगर, रिंग रोड, रुद्रपुर, जनपद उधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड) पिन - २६३१५३, दूरभाष : ०७८६९८२५६८८, ९४२५२८३९२५

पर्व प्रेरणा अनेक पर्वों का पुञ्ज : मकर संक्रांति पर्व

ले. मनुदेव 'अभय', विद्यावाचस्पति

वैदिक ऋषिगण परमात्मा की इस सृष्टि के द्यौः लोक अंतरिक्ष तथा इस पृथिवी लोक के रहस्यों को जानने का सदैव प्रयत्न करते थे। संध्या (ब्रह्म यज्ञ) के प्रसंग में अघमर्षण मंत्राः के अन्तर्गत ऋग्वेद १०/१९०/१-३ द्वारा सृष्टि उत्पत्ति का क्रमिक विकास इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि यह सृष्टि उद्देश्यपूर्ण है। कारण से कार्य होता है, अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती। प्रलय के पूर्व सृष्टि में विद्यमान जीवों को उनके कर्मों का फल देने के लिए तथा अन्य जीवों को मोक्षानन्द का अवसर देने, प्रेरणा देने आदि हेतुओं के कारण सृष्टि की उत्पत्ति हुई।

२१वीं शताब्दी के विश्व के अनेक महान व्यक्ति 'वेद' को सर्वोच्च ज्ञान का पुस्तक स्वीकार कर विश्व के ग्रंथालय में शीर्षक्रम पर रखकर सम्मानित किया है। इससे मत-मतान्तर, पंथ, मजहब तथा समुदायों की कथित पुस्तकें स्वतः गौण स्थान पर आ गई। अब न तो चौथे दिन सूर्योदय हुआ और न पृथ्वी चटाई की तरह चपटी रह गई है अपितु भौतिक विज्ञान की नवीनतम खोजों और धारणाओं ने ऐसी कल्पित मान्यताों पर पूरी तरह पानी फेर दिया है।

इस सन्दर्भ में इतना ही कथन पर्याप्त है कि हम आर्यो ने सदैव प्रकृति से बड़ा प्रेम किया है तथा अन्तरिक्ष के साथ द्यौ लोक एवम् पृथ्वी पर शांति की प्रार्थना की है। प्रकृति के परिवर्तन से अपना पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन व्यवस्था में भी समयानुसार बदलाव किया है। मकर-संक्राति पर्व पर भी एक विशिष्ट परिवर्तन होता है। यद्यपि यह पर्व 'सविता' या सूर्य से संबंधित है। तद्नुसार आर्यो ने इसे एक पर्व के रूप में स्वीकार कर प्रकृति-प्रेम को प्रकट किया है।

मकर संक्रांति पर्व क्यों और कैसे ?

वेद और वर्त्तमान विज्ञान के अनुसार पृथवी सूर्य का चक्कर लगाते हुए २३.०५ पर झुकी रहते हुए अपने केन्द्र पर ही घूमती रहती है। अंतरिक्ष में जितने भी ग्रह-उपग्रह आदि हैं, वे सभी सूर्य से प्रकाशित है। चन्द्रमा एवं सूर्य से प्रकाश ग्रहण करता है। खगोलशास्त्र के ज्योतिषियोके अनुसार क्रांतिवृत्त के १२ नाम कल्पित किये गये हैं। उन १२ भागों पर विभिन्न आकृति वाले पदार्थों के नाम रखे गये हैं। जैसे मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन। यही १२ राशियाँ हैं।

अयन अनुभाग : अक्षांश-देशान्तर रेखायें (कल्पित)

इसी प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी के गोलाकार भाग में पूर्व से पश्चिम ३ रेखायें भी कल्पित खींची गई है। पृथ्वी के बिलकुल बीचोंबीच में पूर्व से पश्चिम भू-मध्य रेखा (विषुवत रेखा) २३.१०.२, उत्तर में कर्क रेखा तथा दक्षिण में २३.१०.२४ पर मकर रेखा। इन्हें 'अयन' भी कहते हैं। जब सूर्य मकर रेखा को स्पर्श कर वापस लौटता है, तब प्रत्येक वर्ष की १४ जनवरी को मकर संक्रांति मनाई जाती है। तभी से दिन शनैः शनैः बड़े और रात छोटी होने लगती है। यह सब चेतन शक्ति द्वारा नियंत्रित है।

२२ दिसम्बर को सबसे छोटा दिन

प्राचीन काल से काल गणना के अनुसार सौर मंडल का मुखिया सूर्य प्रति वर्ष २२ दिसंबर को अधिकतम बिन्दु पर पहुंचकर मकर रेखा को स्पर्श करता है और विषुवत रेखा से २२ डिग्री २६ मिनट दक्षिण में रहकर फिर शनैः शनैः सूर्य उत्तर दिशा की ओर बढ़ने लगता है। इस प्रकार वर्ष में एक दिन २२ दिसंबर को छोटा दिन तथा राथ बड़ी होने की घटना को खगोल विज्ञान में विन्टरखोलस्टिक और ज्योतिष विज्ञान में मकर सायन कहा जाता है। यह सब परिवर्तन प्रकृति में व्याप्त तथा उस पर नियंत्रण करने वाली एक अदृश्य शक्ति द्वारा होता रहता है। ऋग्वेद के १०वें मण्डल के अन्तर्ग नासदीय सूक्तों में प्रलय, प्रकृति, सृष्टि रचना आदि का जिस प्रकार से बुद्धियुक्त वर्णन पाया जाता है, उसे पढ़कर आधुनिक वैज्ञानिक विशेष कर अमेरिका के 'नासा' के वैज्ञानिक आश्चर्यचकित है . आज से दो अरब पूर्व भारतीय ऋषियों ने जो चिन्तन वेद के माध्यम से विश्व के सम्मुख प्रस्तुत किया, वह प्रकृति के नियमानुसार बड़े ही रोचक-शैली में अभी भी उपलब्ध है। वेद स्वतः प्रमाण ग्रन्थ है और इनके पूर्ववर्ती ग्रन्थ परतः प्रमाण है।

सृष्टि की आत्मा सूर्य :-

चित्रन्देवानामुद्गादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने आ प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम्। सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा। (यजु. ६/४२)

अर्थ -जो सब देवों में श्रेष्ठ और बलवान है, जो सूर्य लोक प्राण और अपान तथा अग्नि का भी प्रकाशक है, जो द्यौलोक,

अन्तरिक्ष और पृथिवीलोक में व्यापक है, जो जड़ और चेतन जगत् का आत्मा- जीवन है, वह चराचर जगत का प्रकाशक परमात्मा हमारे दृश्यों में सदा प्रकाशित रहे। *(भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती)*

उपरोक्त मन्त्र से स्पष्ट होता है कि सृष्टि में उपलब्ध अनेक ग्रह-उपग्रहों आदि से सर्वश्रेष्ठ वह प्रकाश जो आगे ले जाने वाला होता है। यही कारण है कि मकर संक्रांति के पूर्व सम्पूर्ण देश में इस उत्सव को मनाने की विविध प्रणालियां है। इस पर्व की मान्यताएं एक हैं, लेकिन इसे मनाने के अन्दाज अलग-अलग है। पंजाबी समाज 'लोहड़ी', सिन्धी समाज 'लाललोई', तमित समाज 'पेड़ा मांड़गा', दक्षिण भारतीय 'पोंगल', उत्तर भारतीय 'खिचड़ी' पर्व तथा मराठी के ब्राह्मण समाज 'मकर संक्रांति' के रुप में मनाते हैं। यहां अति संक्षेप में इनका विवेचा इस प्रकार है :-

(१) मराठी समाज :- महाराष्ट्रियन समाज में प्रातः स्नान के बाद मिट्टी से बना छोटे-बड़े जिसे सुपणा या वाण कहा जाता है में अनाज, तिल, गुड़ का दान किया जाता है। समाज में एक सप्ताह तक हल्दी, कुमकुम मिलन समारोह मनाया जाता है। ऐसे आयोजन घर-घर में होते हैं।

(२) पंजाबी समाज :- पंजाबी समाज की मान्यतानुसार इस अवसर पर 'लोहड़ी' पर्व मनाया जाता है। यह नई फसल के आने का पर्व है। रात्रि में 'लोहड़ी' आग जलाकर मनाई जाती है। पिछले पूरे वर्ष में कोई हर्षोत्सव, सन्तान जन्म, नये शिशु का आगमन के उपलक्ष्य में यह 'लोहड़ी' पर्व अधिक व्यापक रुप में मनाया जाता है तथा परिजनों में मिठाई बांटी जाती है।

(३) मलियाली समाज :- इस समाज द्वारा 'अयम्मा' (महादेवी) मंदिर में मक्का विलक्क की विशेष पूजा की जाती है। महिलाएं लालपोली वेशभूषा के साथ पोंगल पर्व मनाती हैं।

(४) सिंध समाज :- संक्रांति के एक दिन पूर्व धान की पीड़ियों से लाललोई बनाई जाती है। खीर-गुड़, परमल का भोग अर्पित कर इसे जलाया जाता है और महिलाएं इस अग्नि की परिक्रमा लगाकर सुख-शांति तथा परिजनों की लम्बी आयु संबंधी प्रार्थना करती हैं।

(५) उत्तर भारतीय ब्राह्मण समाज :- संक्रांति के एक दिन पूर्व इसे मनाने की तैयारी की जाती है। इस अवसर पर दाल (अरहर, तुअर) और चावल की खिचड़ी गरीबों में दान की जाती है। महिलाएं अपने सुहाग की मंगलकामना के लिए १३ वस्तुएँ महिलाओं में बांटती है।

(६) बंगाली समाज :- इस अवसर पर बंगाली परिवारों में तिल दान तथा स्नान का बड़ा महत्व है। प्रत्येक घर में चावल से बना व्यंजन पीठा और पाटी सपता विशेष रुप से बनाया जाता है। इस दिन पतंग उड़ाने का भी अपना अलग महत्व है।

पतंगोत्सव का पर्व

इन दिनों आकाश साफ रहने के कारण देश के अनेक नगरों में पतंके उड़ाई जाती है। ये पतंगें भी भिन्न-भिन्न आकृति तथा पतंगे कागज का कलात्मक रुप से बनाकर उड़ाई जाती है। इसमें एक व्यक्ति पतंग उड़ाता है तो दूसरा उसका सहायक रंगीन मन्जा लपेटेने के लिये रहता है। इस अवसर पर पतंग प्रतियोगिताएं भी खूब होती है और तेज मन्जें में जो कि बारिक कांच में लिपटा होता है, उससे धागा काटकर पतंगे काटी जाती है। प्रतियोगिता में हार-जीत का भी बड़ा महत्व है। उत्तर प्रदेश में 'गिल्ली डंडा' भी खेला जाता है।

पक्षी हिंसा :- आकाश में पतंग प्रतियोगिता के समय तेज मन्जे से कई पक्षी इसमें फंस जाते हैं और घायल होकर नीचे गिर पड़ते हैं। कई प्रान्तों में पतंग बनाने का उद्योग बड़े पैमाने पर चलाया जाता है।

उत्तरायण की ओर प्रस्थान :- २२ दिसम्बर को इस खगोलीय घटना के अन्तर्गत दिन की अवधि लम्बी तथा रात्रियां छोटी होने लगती है। इसे ही उत्तरायण का प्रारम्भ कहा जाता है। यह ध्यान रखने योग्य सिद्धान्त है कि प्रतिवर्ष २१ मार्च से दिन व रात बराबर होते हैं तथा २१ जून तक दिन बड़े होते जायेंगे। इस प्रकार मकर संक्रांति का पर्व अपने साथ अनेक पर्व लेकर आता है। इस पर्व का प्रमुख घटक सूर्य ही है। इसलिए भारतीय समाज में इस वृहस्पति अर्थात् गुरु पर्व कहा जाता है।

पता : सुकिरण, अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर -४५२००९ (म.प्र.)

मकर संक्रान्ति पर्व की
हार्दिक शुभकामनायें
मकर संक्रान्ति पर्व महर्षि के विचारों का
जन-जन में संक्रमण की प्रेरणा देता है।
इस पर्व पर आर्य उपदेशकों, प्रचारकों, वक्ताओं,
कलाकारों, पाठकगणों और लेखकों को
छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
अग्निदूत परिवार की ओर से
हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रासङ्गिक चल चित्रों की सफाई

- डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

सफाई की बात पर इस ओर ध्यान जाना आवश्यक है कि आज की जो आधुनिक चल चित्र निर्माण शाला है उसे चलचित्रों से अश्लील फूहड़, दृश्य, संवाद व चित्र भी हटाने चाहिये, उनकी सफाई होनी चाहिए, ऐसे दृश्य संवाद व गीत जिन्हें यहां देना आवश्यक नहीं है, इन्हें आज के आधुनिक निर्माता, निर्देशकों द्वारा आधुनिक शब्द देना विकास का शब्द देना भारतीय संस्कृति का अपमान है। आज घर-घर में टी.वी. है प्रत्येक हाथ में मोबाइल जैसे इलेक्ट्रानिक साधन है, जिनसे ऐसे अश्लील चित्र व धारावाहिक आदि दिये जाते हैं। इनसे सामाजिक व सांस्कृतिक प्रदूषण होता है। यही कृत्य आज कल विद्यालयों की दीवारों पर देखा जा सकता है। जहां अश्लील सिनेमाओं के अश्लील तथा कामुक पोस्टर लगाए जाते हैं। विद्यार्थी जब विद्यालय में जाते हैं, तब सर्वप्रथम इन कामुक व अर्धनग्न पोस्टरों पर उनका ध्यान जाता होगा। बालकों का मन श्वेत वस्त्र की भांति निर्मल होता है, जब वह बार-बार ऐसे दृश्य, पोस्टर आदि देखेगा तो पढ़ाई से अधिक उसका ध्यान इन पर होगा। यह हमारे लिए चिन्ता का विषय है।

गंगा की सफाई, पानी की सफाई, सड़कों, मोहल्लों व गलियों की सफाई के साथ इन पोस्टरों, सिनेमा के अश्लील दृश्य संवाद व गीत तथा अनावश्यक मारधाड़ के दृश्यों की भी सफाई होनी चाहिए। पहले मदर इण्डिया, गंगा मांग रही बलिदान, सिकंदरे आजम, उपकार, राजधानी जैसी फिल्में बनती थी, देशभक्ति के सुन्दर गीत होते थे, सामाजिक अच्छे दृश्य व कथानक होते थे। शिक्षाप्रद बातें होती थीं, रामायण, महाभारत धारावाहिक प्रसारण के समय सड़कें व यातायात रुक जाते थे। बाजार खाली व सूने हो जाते थे, परन्तु आज व्यावसायिक फिल्मों ने सब उलट पुलट कर दिया है।

आज के सिनेमा में शोरगुल अर्धनग्नता व अश्लील गाने, अश्लील संवाद अधिक है, जिनका यहां वर्णन करना आवश्यक नहीं, परन्तु इतना कहना पर्याप्त होगा कि इन दृश्य व संवादों का आज की नवयुवा पीढ़ी पर, बालकं पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? सिनेमा जगत के लोग इन अर्धनग्न कामुकता पूर्ण चित्र व संवादों को सामाजिक उन्नति कहते हैं, वह इन बातों को जो हम अश्लीलता का विरोध करते हैं, तो इसका मानसिक पिछड़ापन बताते हैं कि यह पिछड़ी बातें हैं, क्या अर्धनग्नता के दृश्य व संवाद सामाजिक उन्नति है ? यह विचारणीय प्रश्न है इससे समाज का भला कभी नहीं हो सकता क्योंकि सिनेमा निर्माताओं का यह व्यवसाय है वह इसकी ओह में धनार्जन हेतु यह सब बातें करते हैं, परन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसी शर्मसार करने वाले कथानक गीत संवाद व चित्रों से उन्नति कभी नहीं हो सकती, यह अवनति तो कर सकते हैं, उन्नति नहीं। समाज को अश्लीलता परोसना कहां की उन्नति है, इसीलिये समाज में आज पाश्चात्यता बढ़कर अश्लीलता, बलात्कार, यौन शोषण, पाखण्ड, मद्यपान व दुष्ट प्रवृत्तियां दुर्व्यसन बढ़ रहे हैं, इन्हीं से समाज गर्त में जा रहा है।

व्याभिचार, भ्रष्टाचार बढ़ रहे हैं, सिनेमा जगत में परोसे गए भौतिकवाद अर्थात् अथाह धन दौलत के दुरुपयोग से चकाचौंध से सामान्य जन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है, यही कारण है जहां धन दौलत के ढेर लगे हैं, आवश्यकता से अधिक आराम व प्रमाद के साधन है, पाश्चात्यता के रंग में रंगे हुए हैं वहां सत्य रुप से देखें तो परिवारं में प्यार कम वैमनस्य अधिक है, बेचैनी अधिक है, द्वेष है, उच्च रक्तचाप मानसिक तनाव जैसी रोगों से वह ग्रस्त हैं, वहां खुलापन नहीं है, शान्ति नहीं, अपनापन नहीं है, है तो बहुत कम है, अधिक धन जहां होगा वहां भय का वातावरण बना रहेगा, जीवन का जो मूल शान्ति व निश्चितता है, नहीं मिल सकते।

आज आवश्यकता है कि ऐसे सिनेमा में भी सफाई होनी चाहिए, सिनेमा आज विज्ञान व ज्ञान युक्त हों, बालकों का भविष्य बनाने वाले हों, ऐतिहासिक क्रान्तिकारियों, शहीदों के जीवन चरित्र पर आधारित हो। देशभक्त व महान व्यक्तियों के जीवन से जिनमें प्रेरणा मिलती हो, आज कल टीवी पर भी डिस्कवरी, इतिहास (हिस्ट्री) जैसे साफ सुथरे चैनल चल रहे हैं, भक्ति भावपूर्ण सत्य पर आधारित चैनल चल रहे हैं कई टीवी व सिनेमा के निर्माता निर्देशक इस बात का ध्यान भी रखते हैं कि अश्लीलता फूहड़पन न हो न अश्लील गीत संवाद हो न अश्लील दृश्य हों, अपितु सिनेमा साफ सुथरी छवि प्रस्तुत करने वाले हों।

सिनेमा जगत की सफाई भी आवश्यक है, नगरों में घर से निकलते ही अधिकांशतः विद्यालयों की दीवारों पर अश्लील पोस्टर लगे रहते हैं, सिनेमा के यह पोस्टर भी बच्चों विद्यालयों के मन को दूषित करे बिना नहीं रह सकते। छोटे बालकों विद्यार्थियों का मन श्वेत चादर की भांति होता है, जब टीवी मोबाईल व बाजार की दीवारों पर विद्यालयों की दीवारों पर यह अत्यन्त अश्लील चित्रों के बड़े बड़े पोस्टर लगे मिलते हैं, तो इसका बुरा प्रभाव उनके छोटे से मन व मस्तिष्क पर अवश्यक पड़ेगा। अतः इन सब अश्लीलताओं की भी सफाई आवश्यक है।

घर में, आंगन में, गलियों में, सड़कों में, मोहल्लों में, बाजारों में, नदियों व कारखानों में सभी जगह सफाई होनी चाहिए, सिनेमा जगत में भी सफाई होनी चाहिए और आर्यसमाज के अनुसार, वैदिक धर्म के अनुसार शरीर की व मन की भी सफाई होनी चाहिए। आत्मा का भोजन ज्ञान है, जो वेद से मिलता है। इस वेद ज्ञान की शिक्षा टी वी पर, मोबाइल पर एवं विद्यालयों में भी होनी चाहिए। जिनसे हमारे परिवार समाज का विकास होकर, देश उज्जवल निर्मल गौरवशाली बनें।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा, जिला-बुलन्दशहर २०३१३१, (उ.प्र.)

काँटो का जीवन

नफरत याने घृणा
काँटा याने दुश्मनी
किसी भी दशा में बढ़ाओ नहीं
कपट, लालच रुप
मिश्रित स्वाद से बढ़ाओ नहीं
झूठ बेईमानी भेड़,
रुपी जल से सींच सींच कर
कभी भी फुलाओ नहीं
ऐसे काँटे या नफरत
वृक्ष कभी लगाओ नहीं
अपनी पुरानी रंजिश
जंग लगी नफरत को
मन से भुलाकर आगे बढ़ो
पहिले से चल रहे प्रेम को
कभी भी ठुकराओ तुम नहीं
विरह ज्वलन आग में
कभी भी जलाओ नहीं
हृदय वेदना दुःखी मन को
मन में क्यों न हो,
अपने होठों पर खिली मुस्कान
कभी भी भूलो नहीं
निराशा को कभी मन में
रखना नहीं और कभी भी
नफरत का कांटेदार वृक्ष
स्वच्छ जीवन में लगाना नहीं।

रचयिता - सुभाषनारायण भालेराव 'गोविन्द'
अंवतिका-ए-३८, न्यू नेहरु कालोनी, ठाटीपुर,
ग्वालियर (म.प्र.)

चिन्तनात्मक

क्या १ जनवरी नववर्ष है ?

– डॉ. दिव्येश्वर शास्त्री (शिक्षक)

प्रबुद्धजनों,

हम लोग जिस देश में रहते हैं। वह भारत देश महान् है। यहां की शिक्षा सभ्यता और संस्कृति बहुत ही महान् है। यह आर्यावर्त देश दुनिया के लिए अतिशय अनुकरणीय रहा है। यहां के अनेक सर्वमान्य सिद्धान्त है। इस पावन भारत देश में पर्वों का तांता बंधा रहता है। प्रत्येक वर्ष प्रत्येक माह यहां पर पर्व मनाए जाते हैं। हर एक पर्व हमें आनन्द से परिपूरित कर देता है। क्योंकि पर्व का अर्थ है **पूरयति जनान् आनन्देन इति पर्व**।

विचारशील सज्जनों ! १ जनवरी को हमारे देश में नया पर्व मनाया गया जिसे अंग्रेजी में New Year's Day नया साल कहा जाता है। इस नये वर्ष को भारत में जगह-जगह मनाया जाता है। नये वर्ष के उपलक्ष्य में लाखों बकरे-बकरियां बलि भेंट चढ़ गए। हजारों लोगों की मति मद्य में लुप्त हो गई। अनेक स्थलों पर बलात्कार, भ्रष्टाचार और अत्याचार हुएष परम पुनीत कहे जाने वाले देवी देवताओं के मंदिर तीर्थ स्थल मद्य,मांस एवं अण्डों से अपवित्र हो गए लाखों बकरें बकरियां एवं मुर्गा-मुर्गियों की मूक आत्मा चीत्कार कर उठी। प्रतिदिन शान्त रहकर सुखनिद्रा देने वाली रात्रि १ जनवरी को खड़ी-खड़ी जुआरियों को देखती रही और उनके दुख से निकलते हुए कर्कश लड़खड़ाती वाणी को सुनती रही। श्रद्धा के केन्द्रबिन्दु भारतवासी अन्धश्रद्धा में लीन होकर नूतन वर्ष की मादकता की दुर्गंध लेकर अपना खून पसीना बहाकर अहर्निश कठिन कार्य करके संचय किए हुए धन को लोग चन्द समय में फूंक दिए। लोग कहते हैं कि नये वर्ष के प्रथम दिन कोई भी गलत कार्य नहीं करना चाहिए, कोई किसी को न मारे, क्योंकि नूतन वर्ष के प्रथम दिवस पर किया हुआ कार्य पूरे वर्ष भर कर रहता है। पुनरपि मनुष्य जानते हुए भी अनेक हिंसा करता है। देखिए हमारा सिद्धान्त क्या कहता है :-

अहिंसा परमो धर्मः अर्थात अहिंसा परम धर्म है। यह ऋषि मुनियों का अकाद्य सिद्धांत है। जब तक सिद्धान्त का मनसा वाचा कर्मणा परिपालन नहीं किया जाता तब तक इस संसार का कोई भी व्यक्ति सुख शान्ति की प्राप्ति नहीं कर सकता है, सद्विचार, सच्चरित्र, सदाचार को लेकर आया हुआ नया वर्ष दुर्विचार, दुश्चरित्र, दानवता और अनाचार को साथ जाता है। हमारे भोले भाले भारतवासी अतिशय मिथ्यापान के शिकार हो जाते हैं। जो कि इस ईशा मसीह के द्वारा चलाए हुए नये वर्ष को हिन्दुओं का हर बालक अपना मानता है। गलत विचार का शीघ्र प्रचार होता है। जबकि हमारा सिद्धांत है अ

असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

अर्थात् हे प्रभो ! मुझे असत्य से सन्त, अन्धकार से प्रकाश और मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो। लोग सद् प्रार्थना तो अवश्य करते हैं पर प्रार्थनानसार सत्कार्य नहीं करते हैं। सब जानते हैं कि धार्मिक कार्यों में बलि प्रथा निषेध है तथा किसी भ सत्य शास्त्रों में बलिप्रथा का विधान नहीं है। सर्वप्राचीन ग्रन्थ वेद में भी पशु बलि का विरोध किया गया है। यथा

यदि नो गां हिंसी यद्यश्वं यदिपुरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यर्थोनो सो अवीर हा॥

अथर्ववेदीय मंत्र में प्रत्यर रूप में प्राणीहिंसा का खंडन किया गया कि दुनियां के लोगों सावधान ! यदि कोई व्यक्ति हमारे भाई-बंधु, पुत्र, कलत्र तथा गाय, घोड़ा, बकरी, भेंड़ आदि को मारता है तो उसे सीसे की गोली से बींध डालो अर्थात् मार डालों जिससे कि विनाश लीला न करे। आदि सम्राट मनु भी कहते हैं-

यस्तु प्राणिवधंकृत्वा देवान् पितृंश्च तृप्यति।
सोऽविद्वांश्चन्दनं दग्ध्वा कुर्यादङ्गारलेपनम्॥

अर्थात् जो व्यक्ति प्राणियों की हत्या कर उसके मांस से देवताओं और पितरों का तर्पण करता है, वह ऐसा ही

कर्म करता है, जैसे एक मूर्ख चंदन को जलाकर अंगारों का लेपन करता है । आज पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति में डूबकर अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूल रहे हैं । अतः भारतवासियों उठो और सत्य के ग्रहण करने में उद्यत रहो । नूतन वर्ष का प्रारंभ कब से हुआ उसके बारे में प्राचीन ऋषि महर्षिकृत आर्षग्रन्थों से मालूम पड़था है, कि सृष्टिका प्रथम मास वैदिक संज्ञानुसार मधु कहलाता है, और वही फिर ज्योतिष में चान्द्रकाल गणनानुसार चैत्रमाह कहलाने लगा । इस कथम के प्रमाण के लिए ज्योतिष के हिमाद्रिग्रन्थ में श्लोक आया है -

चैत्रमासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि ।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति ।।

अर्थात् चैत्र मास शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा जी ने जगत् की रचना की ।

पूर्व परम्परानुसार के अनुसार आर्यों के अधिकांश संवत् चैत्र प्रतिपदा से आरंभ किए गए । ब्रह्मदिन, सृष्टि संवत् वैवस्वतादिमन्तराम्भ, सत्, युगादि युगान्तर, कलि संवत् विक्रम संवत् चैत्र प्रतिपदा को ही आरम्भ होता है, पर्व मनाने की प्रथा प्रचलित है । मुसलमानी राज्य में आर्यो सनातन संस्थानों में असत्य व्यस्त होने पर भई नवसंवत्सरोत्सव के समारोह मनाने की परिपाटी बराबर बनी हुई है । संसार के प्रायः सभी सभ्यजातियों में आनन्दानुभव के साथ-साथ यज्ञादि धर्मानुष्ठान पूर्वक इस नवसंवत्सराम्भ उत्सव को मनाने की प्रथा है । पर आज लोग इस सभ्यता को भूलकर ईसाईयों का अन्धानुकरणकर १ जनवरी को New Year's Day मानकर मनाते हैं । और नाना कष्टों को भोगते हैं । अतः मननशील मनुष्यों को चाहिए कि सत्यासत्य और उचितानुचित का विचार कर जो लोक वेदविरुद्ध न होकर वेदानुकूल हो उसी पर्व को माने मनावें । जिससे सबको सुख शान्ति और आनन्द की प्राप्ति हो ।

पता : शास. उ. मा. विद्यालय, बौंदा, सरिया, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

रोचक प्रसंग

काश्मीर का शास्त्रार्थ

एक बार जब गणपति शर्मा काश्मीर गये । उन्हीं दिनों पादरी जानसन वहाँ पहुंचा । पादरी जानसन धारा प्रवाह संस्कृत बोलता था । उसने वेदान्त विषय पर काश्मीरी पंडितों को शात्रार्थ के लिए ललकारा उसने काशी व कांची आदि पच्चासों स्थानों पर पौराणिक पंडितों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा था । कश्मीरी पंडित को उसके सामने आने का साहस न हुआ महाराजा प्रताप सिंह ने देखा कि सबसे बड़े हिन्दूराज्य में ब्राह्मण पराजित मनोवृत्ति का प्रदर्शन कर रहे हैं। राज्य की नाक कट रही है । राजा चिन्तित सा था । किसी मे कहा कि आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वान् शास्त्रार्थ समर के सेनानी पं. गणपति शर्मा आजकल यहीं है । उनको निमन्त्रित किया जाए । महाराजा ने पं. जी को बुलाने की आज्ञा दी । किसी पौराणिक ने कहा , "महाराज वे तो आर्यसमाजी पण्डित है ।" महाराजा ने कहा- तो क्या हुआ यदि आर्यसमाजी है । जॉनसन को तो ठीक कर देगा ।

सहस्रो श्रोताओं की उपस्थिति में शास्त्रार्थ आरंभ हुआ । "हम आपसे शास्त्रार्थ करने आए हैं ।" पं. जी - पहिले यह बतलाएं कि शास्त्रार्थ शब्द का क्या अर्थ है ? क्या शास्त्र से मतलब आपका छः शास्त्रों से है और क्या आप को यह ज्ञात है कि अर्थ शब्द अनेकार्थ का वाचक है। अर्थ अर्थात् धन, अर्थ अर्थात् प्रयोजन, अर्थ अर्थात् द्रव्य गुण, कर्म (वैशेषिक दर्शन के अनुसार) । शास्त्र भी केवल छः नहीं है, धर्म शास्त्र है, अर्थ शास्त्र, नीति शास्त्र है आप जरा समझाइये कि आप किस शास्त्र का अर्थ करने आये हैं । जब शास्त्रार्थ शब्द का अर्थ समझायेंगे तब हम उत्तर देंगे ।

जॉनसन (गड़बड़ाये हुए बोले) - हम इसका उत्तर नहीं दे सकेंगे । इस पर महाराज प्रताप सिंह ने सिर हिला कर कहा, "अब काहे को उत्तर आयेगा ।" तब पं. जी ने महाराजा से कहा - महाराज जॉनसन उत्तर नहीं दे रहा है । महाराजा ने कहा - "आपके पहिले ही प्रश्न में उसका सिर नीचे हुआ । वह जाये अपने घर ।" महाकवि नाथूराम शंकर शर्मा जी ने इसी पर लिखा - रौंद रौद मारी जानकारी 'जानसन' की ।

- प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु, वेद सदन, अबोहर (पंजाब)

सांस्कृतिक

जीवन का सम्मान

- प्रो. सुभाषचन्द्र

आर्य संस्कृति जीवन का सम्मान करती है। वह चींटी से लेकर हाथी तक, छोटे से जीव से लेकर विशालकाय व्हेल मछली तक सभी में एक ही ब्रह्म के दर्शन करती है और सभी का सम्मान करती है। उसी आधार पर हमारे नियम बने हुये हैं। जिन्हें हम शास्त्राज्ञा अथवा परम्परायें कहते हैं। ये नियम,समाज में प्रचलित है और उन्हें मान्यतायें परम्परायें, पुण्य और पाप के रुप में परिभाषित किया गया है, जैसे कि प्यासें को जल, भूखे को अन्न देना पुण्य का काम है।

मंदिर, धर्मशाला और चिकित्सालय खोलना पुण्य का कार्य है। कुंये बनवाना, तालाब, बावड़ी बनवाना आदि पुण्य कार्य का आधार यही एक सिद्धान्त हैं। वह है : जीवन का सम्मान।

युद्ध के नियम भी इसी पर आधारित है। निहत्थों पर वार नहीं करना, युद्ध से भागवने वालों को जाने देना, यदि शत्रु शरण में आ जाये तो उसकी रक्षा करना, बंदियों से मानवीय व्यवहार करना, स्त्रियों और बच्चों पर शस्त्र न उठाना, यह सब नियम इसी सिद्धान्त पर आधारित है। इसके विपरीत कार्य वर्जित है।

पाश्चात्य सभ्यता तथा अन्य सभ्यताओं में ऐसा कोई नियम नहीं है।

इस सिद्धान्त के आधार पर वे अपने सब कार्यों को करते हैं और फिर विश्व को मानवाधिकार का पाठ पढ़ाते हैं। शांति का प्रचार करते हैं और इन सब पर आधारित संगठन बनाते हैं। सिकंदर से लेकर वियतनाम युद्ध तक और वर्तमान में इराक, अफगानिस्तान युद्धतक इन्होने इसी सिद्धान्त का पालन किया और फिर प्रचार के द्वारा अपने अपराधों को सही ठहराते हुये, जनसमर्थन और मान्यता प्राप्त करने की कोशिश की।

युद्ध में जैविक अस्त्रों का, रासायनिक और नाभिकीय बमों का निर्माण और सीमित उपयोग इस बात का प्रमाण है कि इस जीवन का सम्मान केवल हमारी सभ्यता का अंग है। बाकी सब ढकोसला है। जीवन के सम्मान को निर्वाह करने वाला हमारी दूसरी मान्यता अथवा परम्परा है -

शरणागत रक्षा :- शरणागत की रक्षा करना हमारी परम्परा का महत्वपूर्ण अंग है। जो भी शरण में उसकी रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य बन जाता है। राज, शिवि, रघु, अजय और महाराज युधिष्ठिर से आरंभ होकर पृथ्वीराज चौहान तक सबने इस परम्परा का निर्वाह किया। भले ही कितनी बड़ी कीमत इस राष्ट्र को चुकानी पड़ी।

हुमायूँ भी जब दर-दर की ठोकर खा रहा था उसे राजपुताने में ही शरण मिली। वहां भी छल हुआ और सीमित दृष्टि कोप के कारण यहां पर मुगलों को अधिकार जमाने का मौका मिल गया। शरणागत की रक्षा का दूसरा उदाहरण सर टॉमस से ब्रिटिश राजदूत की जहांगीर की दरबार में उपस्थित होकर शरण तथा व्यापार की अनुमति मांगना है। इसके बाद का घटनाक्रम तो सर्वविदित ही है।

शरणागत की रक्षा इस परम्परा का निर्वाह ही हमारे लिये संघर्ष का कारण बना और हमें बार-बार परीक्षाओं से गुजरना पड़ा। शरणागत की रक्षा करना हमारे हिन्दू धर्म का महत्वपूर्ण अंग और यह हमारी सामर्थ्य और उदारता का प्रतीक है। यह गुण ही हमें अन्य से श्रेष्ठ प्रमाणित करता है, परन्तु इस परम्परा के निर्वाह के लिये शरणागत की योग्यता, नीयत, प्रवृत्ति और उद्देश्य को भी ध्यान में रखना होगा।

आगन्तुक तो आगन्तुक होता है, परन्तु शरणागत की पात्रता को हमें जांचना और परखना चाहिए। इसके अभाव में हमारा घर और परिवार असुरक्षित है।

पुण्य कार्य :- इस सिद्धान्त को प्ररिपादित करने वाली अन्य परम्परा, समाज में प्रचलित पाप-पुण्य की मान्यतायें है। पाप और पुण्य की परिभाषायें हमारे जीवन प्रवाह का एक महत्वपूर्ण अंग है। धर्मशालायें बनाना, मंदिर बनवाना, कुयें बनवनाना,

अनाथों की मदद के लिये अनाथाश्रम खोलना, मरीजों को अस्पताल तथा औषधालय चलाना ये सब पुण्य के कार्य हैं। इसको और अधिक सामान्य करें तो भूखे को अन्न और प्यासे को पानी देना पुण्य का कार्य है। यदि हम भोजन कर रहे हैं तो हमारे पास जो बैठा है उसको भोजन प्रस्तुत करते है। कोई पानी मांगे तो उसे पानी पिलाते हैं।

मार्ग के किनारों पर छायादार वृक्ष लगाते हैं और जल की व्यवस्था करते हैं। दूसरों को सताना पाप है और जरुरतमंदों की मदद करना पुण्य का कार्य है।

पराजितों के साथ व्यवहार :- हमारी परम्परा का महत्वपूर्ण परन्तु महंगा अंग है पराजितों को जीवित छोड़ देना तथा उदारतापूर्ण व्यवहार करना। त्रेता युग से लेकर वर्तमान काल तक, हमने पराजितों के साथ सदा महत्वपूर्ण व्यवहार किया। हमने शत्रुओं को समूल नष्ट नहीं किया।

इसकी बड़ी भारी कीमत हमें चुकानी पड़ी है। मुहम्मद गौरी, महमूद गजनवी, हुमायूँ और अकबर आदि नाम सर्वविदित है। परन्तु जो अनसुनी अथवा छिपी हुई बाते हैं वह ज्ञात नहीं है। राजा भीमदेव ने महमूद गजनवी को, पृथ्वीराज चौहान ने मुम्हद गौरी को, हेमू ने हुमायूँ को पराजित करके छोड़ दिया और उदारतापूर्वक व्यवहार किया। परन्तु महमूद गजनवी ने भीमदेव का, गौरी ने पृथ्वीराज चौहान का और अकबर ने हेमू का क्रूरतापूर्वक वध कर दिया था। इसकी बड़ी भारी कीमत हमें चुकानी पड़ी।

अंग्रेजों का साथ लगातार चलने वाले युद्ध में भारतीय राजाओं ने अंग्रेजी सेनापतियों को विभिन्न मोर्चों पर पराजित कर जीवित छोड़ दिया था परन्तु अंग्रेजों ने जिस किसी भारतीय राजा को पराजित किया उसको वध कर दिया अथवा बंदी बनाकर, उसके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया और ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना की। मुगल बादशाह आलम भी अनेकों वर्षों तक इलाहाबाद किले में बंदी थी। अंततः इस परम्परा की बहुत भारी कीमत हमें चुकानी पड़ी है।

पता :- २ WHD, हास्पिटल सेक्टर, सेक्टर-९ भिलाई

सुभाषितम्

महापुरुष-लक्षण

अनिन्दा परकृत्येषु स्वधर्मपरिपालनम् , कृपषेणु दयालुत्वं सर्वत्र मधुरा गिरः ।
प्राणैरप्युपकारित्वं मित्रायाव्यभिचारिणे, गृहागते परिष्वङ्ग शक्त्या दानं सहिष्णुता ।
स्वसमृद्धिष्वनुत्सेकः परवृद्धिष्मत्सरः, नान्योपतापि वचनं मौनव्रतचरिष्णुना ।
बन्धुभिर्बद्धसंयोगः सुजने चतुरश्रता, तच्चित्तानुविधायित्वमिति वृत्तं महात्मनाम् ।

दूसरे के कार्य को अनिन्द्रा, स्वधर्म का परिपालन, कृपण जनों पर दयालुता, सर्वत्र मधुर भाषण, अच्छे मित्र का प्राणपण से उपकार, घर आने पर अलिंगन तथा यथाशक्ति समय पर देना, सहिष्णुता, अपनी समृद्धि का गर्व न करना, दूसरे की बढ़ती देख ईर्ष्या न करना, दूसरे को ताप देने वाला वचन न कहना, मितभाषिता, बन्धु-बान्धवों के साथ अच्छा सम्बन्ध रखना, सज्जनों के साथ मैत्री करना और श्रेष्ठ लोगों के परामर्श लेकर कार्य करना - ये महापुरुष के लक्षण हैं।

- कामन्दकीयनीतिसार

उपादेयात्मक

भोजन एवं स्वास्थ्य रक्षा

- पं. वासुदेव व्रती वेदश्रमी

प्रश्न - भोजन विष की भांति विकार युक्त कैसे हो जाता है?

उत्तर - घी, तैल, जल, क्वाथ (काढ़ा) और व्यञ्जन (भोज्य पदार्थ शाक) आदि ये सब द्रव्य अग्नि पर रखने से परिपक्व होकर शीतल होने पर पुनः आग पर रखकर यदि गरम किए जाए तो विष की भांति विकार युक्त हो जाते हैं, अतः पुनः गरम नहीं करना चाहिए।

घृतं तैलं च पानीयं कषायं व्यञ्जनादिकम् ।
पक्त्वा शीतीकृतं चोष्णां तत्सर्वे स्याद्विषोपमम् ।।

प्रश्न - दही किसके साथ न खावें ?

उत्तर - गरम द्रव्यों के साथ दही न खावें।

प्रश्न - शहद किसके साथ न खावें ?

उत्तर - द्रव्य तथा वर्षा जल के साथ शहद न खावें।

प्रश्न - खीर किसके साथ न खावें ?

उत्तर - खिचड़ी के साथ खीर नहीं खाना चाहिए।

प्रश्न - केला किसके साथ न खावें ?

उत्तर - मट्ठा, दही, या बेल का फल, इनमें से किसी के भी साथ केले का फल नहीं खाना चाहिए।

प्रश्न - घी कब विकार युक्त हो जाता है ?

उत्तर - १० दिन तक कांसे के पात्र में रखा हुआ घी विषवत् हो जाता है।

प्रश्न - मधु और घी विकार युक्त कैसे हो जाते हैं ?

उत्तर - समभाग में मिला हुआ मधु तथा घृत विकार युक्त हो जाते हैं। संयोगविरुद्ध होने से त्याज्य है।

प्रश्न - फलों में अहितकर कौन सा फल है ?

उत्तर - बड़हर।

प्रश्न - शाकों में अहितकर कौन सा शाक है ?

उत्तर - सरसों का शाक।

प्रश्न - अम्ल रस के हित और अहित का प्रमाण क्या है ?

उत्तर - अम्ल रस युक्त पदार्थ पित्त कारक होते हैं। परन्तु आंवला और अनार नहीं।

प्रश्न - लवण रस की विशेषता क्या है ?

उत्तर - नेत्रों के लिये लवण रस अहितकर होते हैं।

प्रश्न - कषाय रस की विशेषता क्या है ?

उत्तर - कषाय रस स्तम्भन कारक होते हैं। परन्तु हरड़ को छोड़कर।

प्रश्न - कौन सा रस आम (आंव)को रोकने वाला होता है ?

उत्तर - कषाय रस।

उत्तम कौन होता है ?

(१) जिस हरड़ में गुठली छोटी हो और गुद्दे अधिक हों तो वह सभी कार्यों में लेने के लिए उत्तम होता है। जो हरड़ जल में डालने पर डूब जाय, वह भी उत्तम होता है।

(२) भिलावे की पहचान भी हरड़ के समान है।

(३) जो वाराहीकन्द सूअर के शिर के आकार का होता है, वह उत्तम है।

(४) सांभर नाने कांच के समान होने से उत्तम है।

(५) सेंधा नमक स्फटिक के समान उत्तम है।

(६) सोनामक्खी सोने के समान कान्तिवाली उत्तम है।

(७) मैनशील जवाकुसुम के समान उत्तम है।

(८) शिलाजीत वही उत्तम होता है जो जल से पूर्ण कांसे के पात्र में डालने से गल न जावे, किन्तु उसमें सूत के समान निकलकर चारों तरफ बढ़े।

(९) कपूर-कसैला तथा स्निग्ध होने से उत्तम होता है।

(१०) सफेद चन्दन अत्यन्त सुगंधी तथा गुरु अर्थात् तोल में भारी होने से उत्तम होता है।

(११) लाल चन्दन अत्यन्त लाल होने से उत्तम होता है।

(१२) अगर-आकार में कौवे के चोंच के समान, स्निग्धझ

तथा गुरु (भारी) होने से उत्तम होता है।

(१३) देवदारु सुगन्धयुक्त, हल्का और रुखा होने से उत्तम होता है।

(१४) सरल (चीर) अत्यन्त स्निग्ध और सुगंध होने से गुणकारी है।

(१५) दारुहल्दी अत्यन्त पीली होने से उत्तम होता है।

(१६) दाख वही उत्तम होता है जो आकार में गौ के स्तन के समान हो।

(१७) साँड-निर्मल तथा चन्द्रकान्तमणि के समान श्वेत-पीलाई वर्ण का उत्तम होता है।

(१८) मधु (शहद) रंग में गाय के घी के समान, रुचिकारक और सुगंधित हो तो उत्तम होता है।

(१९) शाली धन्यों में लालशाली धान्य उत्तम होता है।

(२०) षष्टिक धान्यों में वष्टिक (साठी) धान्य उत्तम होता है।

(२१) शूक धान्यों में यव (जौ) तथा गेहूँ उत्तम होता है।

(२२) शिम्बि धान्यों (फलीवाले) में मूंग, मसूर और अरहर उत्तम होता है।

(२३) छः प्रकार के रसों में मधुर रस उत्तम होता है।

(२४) नमक में सेंधा नमक उत्तम होता है।

(२५) फलों में अनार, आंवला, दाख (अंगूर), खर्जुर (छुहारा) और बिजौरा निंबू उत्तम होता है।

(२६) पत्तों के शाकों में- बथुआ, जीवन्ती और पोई उत्तम होता है।

(२७) फल के शाकों में - परवल, मुनगा उत्तम होता है।

(२८) कन्द के शाकों में - सूरन कन्द उत्तम होता है।

(२९) जलों में - आकाश का जल उत्तम होता है।

(३०) दूधों में - गाय का दूध उत्तम होता है।

(३१) घृत में - गाय का घृत उत्तम होता है।

(३२) तेलों में - तिल का तेल उत्तम होता है।

(३३) ईख से बने पदार्थों में शक्कर उत्तम होता है।

देश निर्माण

मेहनत से मिलती है मंजिल-मेहनत करो जवान।
हमें मिलजुल कर करना है - देश का नव निर्माण॥

काँटों के मुख मुड़ जाते हैं - राही के पग छूकर।
कर्मवीर के शब्द कोष में - लिखी नहीं थकान॥

लौ लेकर पुरुषार्थ की बढ़ जा - अंधेड़ों से आगे।
रोक नहीं पायेंगे तेरी - राहें ये तूफान॥

अन्न-धन के भंडार भरे हैं - धरती के कण-कण में।
हरियाली खेतों में लहरे - भरे भरे खलिहान॥

बढ़ते कदमों की निष्कामी - शक्ति और गति को।
खुद ही रास्ता दे देते हैं - सागर और चट्टान॥

तकदीरों की जंजीरें हम - तोड़ेंगे तदवीरों से।
अपनी किस्मत खुद लिखता है - मेहनतकश इन्सान॥

शहीदों को नमन

आक्रमण करने वालों का संहार करके।
अहसां किया तुमने संसार भर पे॥
शहीदों तुम्हें नमन करता वतन।
जमाने ने देखा तुम्हारा बांकपन॥
तेरी जय से गूँजे धरा और गगन।
भारत के सैनिक को शत-शत नमन॥
तुमने जवानी बलिदान कर दी।
अमर प्यारे भारत की पहचान कर दी॥
सुरक्षित रहे हर नगर का आन।
शहीदों तुम्हें नमन करता वतन॥
भारत के सैनिक को शत-शत नमन।
आतंकवादी मारे बिन कफन॥
किया दुष्टों और दुश्मनों का दमन।
भारत के सैनिक तुम्हें शत नमन॥
न्यौछावर किया मातृभूमि पर तन।
तुम्हें नमन करता तुम्हारा वतन॥
शहीदों तुम्हें नमन करता वतन।

पुण्य स्मरण लोह पुरुष - स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी

- ले. स्वामी सदानन्द सरस्वती

जन्म :- महर्षि दयानन्द १८७६ ईस्वी में पंजाब आए। उनके शुभागमन से इस वीर भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ। नवजागरण की इस शुभ बेला में सरदार भगवानसिंह के घर पोष मास विक्रम संवत १९३४ की पूर्णिमा को बालक केहरसिंह ने जन्म लिया। यही बालक आगे चलकर स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के नाम से विख्यात हुआ। लुधियाना जिला ने राष्ट्र को कई विभूतियां दी है। राष्ट्रवीर लाला लाजपत राय, यशस्वी दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द तथा स्वाधीनता सेनानी साहित्यकार स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक भी इसी की देन थे। इसी जिला के मोही ग्राम में जन्म लेकर स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने इसे गौरवान्वित किया। श्री पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी भी इसी जिला के हैं।

परिवार :- बालक केहर सिंह के पूर्वज हल्दी घाटी से आकर यहां बसे थे। उनकी रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रहा था। वीरभूमि पंजाब के वातावरण में पल कर केहरसिंह यथा नाम तथा गुण बन गये। सरदार भगवानसिंह जी की पत्नी का देहान्त हो गया इसलिये केहरसिंह का लालन-पालन उनके ननिहाल कस्बा लताला में हुआ।

आर्यसमाज का परिचय :- लताला में श्री पं. बिशनदास जी उदासी महात्मा से वैद्यक पढ़ते रहे। इन्हीं पंडित जी के सत्संग से वैदिक धर्म के संस्कार विचार मिले और इन्हीं महात्मा जी के डेरे पर महात्माओं के सत्संग से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का संकल्प करके विरक्त हो गये।

गृह त्याग और संन्यास :- पिता जी की चाह थी कि वह सेना में जनरल कर्नल बनें परन्तु केहरसिंह वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बन गये। धर्मशास्त्रों का पठन-पाठन संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्ष केवल कौपीनधारी रहे। आर्यसमाज के नेताओं व विद्वानों में सर्वप्रथम आपने ही (१९५७ विक्रम) संन्यास लिया।

विदेशों में :- संन्यास लेकर आप ३-४ वर्ष के लिए दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में धर्म प्रचार करते रहे। इसके लिए किसी सभा संस्था से आपने कोई आर्थिक सहायता नहीं ली। स्वदेश लौटे तो पं. बिशनदास जी की आज्ञा से विधिवत आर्यसमाज के कार्य में जुट गये। योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्राम सुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए कई वर्ष रामामण्डी को केन्द्र बनाकर कार्य किया। फिर लुधियाना को केन्द्र बना लिया आपके तप, तेज व त्याग से सारा पंजाब प्रभावित हुआ।

पुनः विदेश यात्रा :- १९१४ ई. में आप मारीशस में वेद प्रचार के लिये गये। तीन वर्ष तक आपने वहां धर्मोपदेश करते हुए वहां के लोगों को संगठन सूत्र में बांधा। भारत के राष्ट्रीय हितों की वहां रक्षा की। राष्ट्रभाषा का प्रचार किया। जनता का नैतिक उत्थान तथा चरित्र निर्माण किया।

स्वतन्त्रता संग्राम में :- १९१६ में स्वदेश लौटकर आर्यसमाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। १९१९ ई. में मार्शल लॉ के दिनों में पण्डित मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा पर आपने कांग्रेस को विशेष सहयोग किया। १९२० ई. में बर्मा गये। वहां धर्म प्रचार के साथ स्वराज्य का प्रचार किया। माण्डले की ईदगाह से २५००० के जनसमूह में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ स्वराज्य का खुल्लम-खुल्ला प्रचार किया। अंग्रेज सरकार की आंख में आप कांटे की भांति चुभने लगे।

काल कोठरी में :- १९३० ई. में पंजाब कांग्रेस के सब नेता जब जेलों में बन्द थे, तो आपने सत्याग्रह को चलाया। डॉ. मुहम्मद आलम के जेल जाने पर आप कुछ समय के लिये प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रधान भी बनाए गए। इस काल में आंध्र प्रदेश के विख्यात कांग्रेसी नेता व स्वतन्त्रता सेनानी पं. नरेन्द्र (हैदराबाद) इत्यादि को आपने जेल भेजा।

१९३० ई. में लाहोर में कांग्रेस की एक प्रचण्ड सभा से अध्यक्ष पद से एक भाषण देने परा आपको बन्दी बना

लिया गया। आपकी गतिविधियों के कारण श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय की सरकार ने तलाशी ली। स्वराज्य संग्राम में केवल आर्यसमाज के उपदेशक विद्यालय (मिशनरी कालेज) की ही तलाशी ली गई।

सेवा में विद्रोह का आरोप :- १९४२ ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रचार कर रहे थे कि आपने भापदोड़ा कस्बा हरियामा में एक बैठक बुलाकर हरियाणा के चौधरियों से कहाकि सेना में कार्य करने वाले अपने पुत्रों तथा सगे सम्बन्धियों से आप कहें कि सत्याग्राहियों पर गोली मत चलाएं। आप की हरियाणा यात्रा का अपूर्व प्रभाव पड़ा। सरकार यह सहन न कर सकी। वायसराय के विदेश आदेश से आपको शाही किसा लाहोर में बन्द करके अमानुषिक यातनाएँ दी गई। किला से छोड़े गये तो विश्व युद्ध की समाप्ति तक दीनानागर में नजरबन्द किए गए। आप पर कई प्रतिबन्ध लगाए गए। जब आप शाही किला में बन्दी बनाए गए तो पंजाब के गवर्नर के वधन का षड़यंत्र करने का भी आरोप लगाया गया।

क्रान्तिकारियों को शरण :- आप दस वर्ष श्री मद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय के प्राचार्य पद पर आसीन रहे और सैकड़ों योग्य शिष्य आर्यसमाज को प्रदान किये जो उनके चरण चिन्हों पर चलते हुये आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिष्ठाता वेद प्रचार का कार्यभार भी आपके कन्धों पर था। तब अपने समय-समय पर कई भूमिगत क्रांतिकारियों को लाहोर में शरण दी।

१९३८ ई. में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापन करके इसे मानव केन्द्र बनाया। धर्मप्रचार संस्कृत प्रसार का तो यह केन्द्र ही है। सहसों रोगी प्रतिदिन यहां धर्मार्थ औषधालय से चिकित्सा करवाते हैं। इस आश्रम में भी देश के स्वतन्त्र होने तक कई क्रान्तिकारी देशभक्त भूमिगत होने के कारण शरण पाते रहे, महात्मा गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के लिए स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज के सुशिष्य यति जी को विशेष रुप से दयानन्द मठ से ही सत्याग्रह करने की आज्ञा दी थी। इस समय उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज इस मठ के अध्यक्ष थे।

नवाबों से टक्कर :-आपने मालेरकोटला, लोहरु व निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सफल मोर्चे लगाकर जन अधिकारियों की रक्षा की। आपके सफल व कुशल नेतृत्व से आर्यसमाज को अपूर्व विजय प्राप्त हुई। महात्मा गांधी आदि नेता भी आपकी कार्यक्षमता से अत्यन्त प्रभावित हुए। इन संघर्षों से स्वराज्य आन्दोलन की गति तीव्र हुई।

लहूलुहान :- लुहारू में तो आप पर कुल्हाड़ों व लाठियों से प्राण घातक प्रहार किये गये। आजन्म ब्रह्मचारी ६५ वर्ष की आयु में इन भयंकर प्रहारों में भी अडिग खड़े रहे। आपके सिर पर इन घावों के इक्कीस चिन्ह थे। एक तो बहुत बड़ा निशान दूर से ही दिख जाता था।

विदेशों में राष्ट्रीय दूत :- प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् भी एक बार आप पूर्वी अफ्रीका में आर्यसमाज के प्रचार के लिए गए। देश स्वतन्त्र हुआ तो भारत सरकार की विशेष प्रार्थना पर आप पूर्वी अफ्रीका व मारीशस की यात्रा पर गये। आपने इन देशों में रहने वाले भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक अवस्था का अध्ययन किया और विदेशों में भारतीय हितों की रक्षा के लिए बड़ा काम किया। मारीशस की स्वतन्त्रता के लिए आपने मार्ग प्रशस्त करने के लिए बड़ा काम किया।

बहुमुखी प्रतिमा - तेजस्वी व्यक्तित्व :- अस्पृश्यता निवारण व दलितोद्धार के लिए आपने अविस्मरणीय काम किया। स्वदेशी प्रचार, गोरक्षा, राष्ट्रभाषा प्रचार, स्त्री शिक्षा के लिए आपने सारे देश का कई बार भ्रमण किया। पीड़ित सेवा के लिए सदैव अग्रणी रहे। आप कई भाषाओं के विद्वान, लेखक, सुवक्ता व इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान् थे। आप वर्षों आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्त्ता प्रधान रहे।

महाप्रयाण :- बलवान शरीर में बलवान आत्मा की उक्ति आप पर अक्षरशः चरितार्थ होती है। भीमकाय स्वतन्त्रतानन्द इतिहास में वर्णित हनुमान, भीष्म, दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कड़ी में से एक थे। १३ अप्रैल १९५५ को बम्बई में आपको निर्वाण प्राप्त हुआ।

पता : दयानन्द मठ, दीनानगर, जिला-गुरुदासपुर (पंजाब)

प्रत्येक कार्य को निश्चित समय पर करो।
धैर्य ही विपत्ति का सबसे बड़ा मित्र है।

२८ जनवरी : जन्म दिवस पर विशेष

लाजपत पंजाब के शेर-ए-बबर

प्रेरक-प्रसंग

- लोचन शास्त्री, शिक्षक

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे राष्ट्रभक्त उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, सेवाभावी समाजसेवक, राजनैतिक नेता, शिक्षा शास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। उनका दूसरा जन्म आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के गोद में हुआ।

वे स्वयं कहते हैं आर्यसमाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्म पिता है। मैंने देशसेवा का पाठ आर्यसमाज से ही पढ़ा है। आह ! एक-एक शब्द कितने रोमांचक हैं - पंजाब केसरी लाला के। न केवल वे देशसेवा का पाठ आर्यसमाज से पढ़े अपितु त्रैतवाद की सत्यता भी उन्हें अच्छी लगी। धर्म और ईश्वर के वास्तविक स्वरुप का ज्ञान भी उन्हें सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से ज्ञात हुआ। स्वराज्य प्रेम की भावना का प्रचण्ड रूप तो सत्यार्थ प्रकाश ने ही दमकाया था। महर्षि दयानन्द को धर्म पिता कहने की गर्वोप्ति उनके प्रभावित व्यक्तित्व को स्पष्ट प्रतिबिम्बित करता है।

लाल बाल और पाल का त्रिक इतिहास में प्रसिद्ध है। उनमें लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक और विपिनचन्द्र पाल थे। लाला जी ने बाल और पाल के साथ कांग्रेस में क्रान्तिकारी विचारों का बीज बोया। जिससे कांग्रेस में एक गरम दल तैयार हुआ। यह तो लाला लाजपतराय के ओजस्वी भाषण का चमत्कार था। यह भाषण बनारस के कांग्रेस अधिवेशन के समय ब्रिटिश युवराज के स्वागत प्रस्ताव के विरूद्ध दिया गया था। इससे देश की अस्मिता जगी थी। ऐसा ही एक अदम्य नेतृत्व लाला जी का तब प्रकट हुआ। जब वे साइमन कमीशन के विरोध में **"साइमन वापिस जाओ"** के नारों के साथ लाहौर के रेल्वे स्टेशन पहुंचे। वहाँ अंग्रेज सार्जेन्ट साण्डर्स ने लाठी चार्ज करके लाला जी की छाती पर प्रहार किया। जिससे उन्हें गहरी चोट लगी। उसी दिन सायंकाल लाहौर में एक विशाल जनसभा को लाला जी ने गरजते हुए सम्बोधित किया। और कहा - मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की प्रत्येक चोट अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील का काम करेगी। अमर देशभक्त लाला लाजपतराय जी के ऊपर लाठियों के प्रहार का बदला सरदार भगतसिंह ने साण्डर्स को गोली मारकर चुकाया।

लाला लाजपतराय की अनेक कृतियाँ हैं। जिनमें 'आर्यसमाज' नामक पुस्तक प्रत्येक देशभक्त को अवश्य पढ़ना चाहिए। जिसने लाला लाजपतराय को दुबारा जन्म दिया, उस माता का परिचय उन्होने उस पुस्तक में दिया।

लाला जी का जन्म २८ जनवरी १८६५ को मामा गांव ढुंढिके में हुआ। यह पंजाब के जिला फरोदकोट में स्थित है। उनके पिता का नाम लाला राधाकृष्ण था।

पता - डी.ए.व्ही. स्कूल हुडको भिलाई

गुरुकुल हरिपुर का पंचम वार्षिक महोत्सव

आपके प्रिय गुरुकुल हरिपुर जुनवानी का **पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव दिनांक ३०, ३१ जनवरी व १ फवरवी २०१५** को देश के शीर्षस्थ विद्वानों, साधु-सन्तों, सद्गृहस्थियों, आर्यजनों तथा समाज को नेतृत्व प्रदान करने वाले नेतागणों की पावन उपस्थिति में अनेक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। अतः आप सभी गुरुकुल प्रेमी महानुभावों से अनुरोध है कि गुरुकुल में सपरिवार ईष्ट, मित्र, सगे-सम्बन्धी, बन्धु-बान्धवों सहित पधारकर हमें उत्साहित करें।

निवेदक : आचार्य दिलीप कुमारजिज्ञासु, हरिपुर

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से वाइरल संक्रमण, खसरा, छोटी माता, कर्णमूल रोगों का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)

बदलता हुआ मौसम, बरसात के पानी से भीगना, रिमझिम फुआरों का आनंद किसे नहीं अच्छा लगता, लेकिन उसके साथ आते हैं तमाम तरह के वाइरल संक्रमण। फिर उसके साथ प्रदूषित पानी, गंदगी, विभिन्नतरह के वाइरल और बैक्टीरियल संक्रमणों के जिम्मेदार होते हैं।

वाइरल संक्रमण कोई आवश्यक नहीं कि बरसात के मौसम में ही हो, होली के आसपास और अन्य महीनों में, खसरा, छोटी माता, कर्णमूल, इनफ्लूएन्जा डेंगू बुखार का हो जो फिर प्रदूषित पानी की वजह से पीलिया, मियादी बुखार जो कि मूलभूत बैक्टीरियल संक्रमण है आम इन्सान की जिन्दगी को तंग करते रहे हैं। होमियोपैथी इन वाइरल संक्रमणों को ठीक करने में अधिक सक्षम और कारगर सिद्ध हुई है।

खसरा (Measles):- खसरा एक संक्रमक तीव्र जुकाम, आंखों से पानी आना, खांसी, सर्दी लगना, बुखार और चकत्ते पड़ना। जैसे कि चकते पड़ते हैं, आंखों से पानी निकलने और रोशनी असह्य लगने के साथ बुखार १०५° तक बढ़ जाता है। अगर उचित ढंग से इलाज न किया जाये तो न्यूमोनिया होने का खतरा बना रहता है। यह संक्रामक रोग है अतः बच्चों के साथ बड़ी उम्र वाले व्यक्ति भी प्रभावित हो सकते हैं।

प्रमुख होमियो औषधियाँ :- मोर्विलियम, एकोनाइट, बेलाडोना, एपिस, ब्रायोनिया, लक्षण के आधार पर दी जा सकती है।

छोटी माता (Chicken Pox) :- यह भी एक संक्रमित रोग है। बच्चे और बड़े दोनों को समान रूप से इससे संक्रमित हो सकते हैं। प्राथमिक लक्षणों में शारीरिक थकावट, हल्का बुखार और शरीर में फफोलों का उत्पन्न होना जो कि छोटी माता की पहचान भी होती है। तेज बुखार, बार-बार प्यास लगना, तेज बुखार के दौरान आंय-बांय बकना, प्यास न के बराबर, छालों में पानी का आ जाना, दानों में खुजली, बेचैनी।

प्रमुख औषधि :- वेरियोलिनम, रसटाक्स, मर्कसाल, फेरस फास, कालीम्यूर आदि।

कर्णमूल (Mcumps) :- कर्णमूल भी संक्रामक रोग है जिसकी पहचान एक या एक से अधिक गलक्षत (Parotid Gland) की सूजन के साथ हल्का बुखार, मुंह खोलने में परेशानी और दर्द के रूप में जानी जाती है। अगर उचित ढंग से चिकित्सा न करायी जाये तो पुरूषों में अंडकोष और महिलाओं में स्तन की सूजन होने का खतरा बना रहता है।

प्रमुख औषधियां :- बेलाडोना, पल्साटिला, पाइलोकरपीन, फाइटोलैक्का आदि औषधियाँ योग्य होमियो चिकित्सक की सलाह लेकर उपरोक्त संक्रमणों से छुटकारा एवं रोकथाम किया जा सकता है।

संक्रमण रोगों में पहली बार चुनी गई औषधि जो कई रोगियों में संपूर्ण लक्षणों को कवर करती है, जीनस इपीडेमीकस कहलाती है। यही कारण है कि पिछले कई संक्रमण महामारियों में होमियोपैथी औषधियों ने अपना सर्वश्रेष्ठ असर दिखलाया। कई रोगियों को संक्रमण रोगों से छुटकारा मिला।

पता : **त्रिवेदी होमियो औषधालय,** भारत माता स्कूल के सामने, टाटीबंध, रायपुर (छ.ग.)

क्या यही गणतंत्र है?

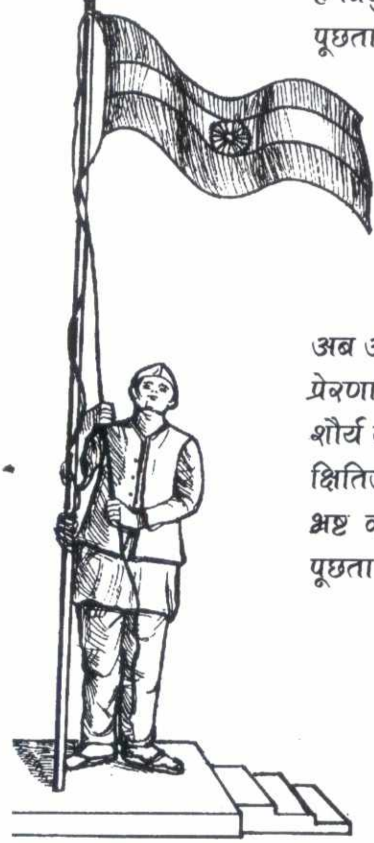

लाज से पलके झुकाए देश के हिम खण्ड हैं।
जल रहा है शौर्य अब तो संयमों के कुण्ड हैं,
स्वार्थ के अंधड़ में बनकर तृण उड़ी संवेदना,
मांग सूनी रह गयी विधवा, बनी हर कल्पना,
है विधुर हर गीत टूटा, भावना का तंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

संस्कृति के द्वार पर, अब नीति की सांकल नही।
आस्था के शीश पर ,श्रद्धा का है आँचल नहीं,
नग्न स्वागत को खड़ी , है देश में निर्लज्जता ,
अब पुरातत्वों में ही है ,शेष अपनी सभ्यता ,
देह तो स्वतंत्र लेकिन, आत्मा परतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

अब अनाथों की तरह, हर स्वप्न पलते नैन में।
प्रेरणा है खो गयी, अंधकारमय इस रैन में,
शौर्य साहस के कथानक, गूलरों के फूल हैं,
क्षितिज पर सम्भावना की, उड़ रही अब धूल है,
भ्रष्ट कर में खेलती यह, देश भक्ति यंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

है यही उपलब्धि अपनी, निर्धनों की झुग्गियाँ।
रेशमी बिस्तर पर टूटी, अनगिनत है चूड़ियाँ,
करकटों में खोजता , रोटी मुझे बचपन मिला,
सो रहा फुटपाथ पर, इस देश का यौवन मिला ,
किस तरह बोलें कि, हम तो हो गए स्वतंत्र हैं।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

वह फसल आतंक की, घर में हमारे बेचते।
बैठ दर्शक दीर्घा में, हम तमाशा देखते ,
अब तो हर नेतृत्व, बन बैठा मृग मरीचिका,
चित्र सारे हैं अधूरे, खो गयी है तूलिका ,
पृष्ठ पर सत्ता है केवल, हाशिया जनतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

: प्रेषक :
प्रभात कुमार, दुर्ग (छ.ग.)

समाचार प्रवाह

आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई का ५५वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

भिलाई । आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई का त्रि-दिवसीय ५५वाँ वार्षिकोत्सव दि. १९, २० व २१ दिसंबर २०१४ को संपन्न हुआ। इसके साथ ही इस अथर्ववेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति भी संपन्न हुई। इस कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर हवन, भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम सियान सदन, नेहरु नगर में भी आयोजित किया गया था।

भारत के ख्याति प्राप्त विद्वानों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इनमें १६ गुरुकुल आश्रमों के संचालक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, सहारनपुर से आचार्य शिवकुमार शास्त्री एवं दिल्ली से भजनोपदेशक पं. सहदेव 'सरस' प्रमुख थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ १९ दिसंबर २०१४ को झण्डा फहराकर आचार्य शिवकुमार शास्त्री के कर कमलों से हुआ। रोज प्रातः हवन, भजन एवं प्रवचन तथा सायं भजन व प्रवचन दो सत्रों में आयोजित किये गये। दोपहर में शालेय छात्रों के लिए विशेष भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। अंतिम दिन यज्ञ की पूर्णाहुति दी गई। इस कार्यक्रम में सभा पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं अन्य आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री रवि आर्य एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रधान श्री अवनीभूषण पुरंग द्वारा किया गया।

संवाददाता : रवि आर्य, मंत्री आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई

आर्यसमाज से.६ भिलाई में वेदप्रचार अभियान सम्पन्न

भिलाई । आर्यसमाज सेक्टर -६ भिलाई (छ.ग.) का ३१ दिवसीय वेद प्रचार अभियान २०१४ के द्वितीय चरण समापन २४ नवंबर २०१४ को संपन्न हुआ। द्वितीय चरण में २४ परिवारों में यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया था। इस आयोजन में ट्विनसिटी भिलाई दुर्ग के विभिन्न मोहल्ले के परिवारों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इन कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं की उपस्थिति भी प्रशंसनीय थी।

इस दौरान ख्याति प्राप्त उपदेशक आचार्य चंद्रदेव जी फरुखाबाद से, आचार्य सत्यपाल जी मथुरा से तथा भजनोपदेशक पं. सहदेव 'सरस' एटा से पधारे। इनके प्रवचनों एवं भजनों से वेदवाणी का प्रचार प्रसार किया। इनमें प्रमुखतः यज्ञ तथा सत्संग पर विशेष बल दिया गया। इस दौरान भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा संचालित सियान सदन में भी एक विशेष कार्यक्रम रखा गया, जिसमें उपस्थित समुदाय द्वारा बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधान श्री अवनीभूषण पुरंग तथा मंत्री श्री रवि आर्य का निरन्तर सहयोग रहा।

संवाददाता : रवि आर्य, मंत्री आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई

१३१ वाँ ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

इंदौर । इंदौर स्थित आर्यसमाज मंदिर मल्हारगंज २०१४ रविवार प्रातः मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा इंदौर संभाग के समस्त आर्यसमाजों द्वारा संयुक्त रुप से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का १३१वाँ निर्वाण दिवस का आयोजन अत्यन्त धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी का ओजस्वी उद्‌बोधन भी हुआ।

कार्यक्रम के अवसर पर आर्यसमाजों के पदाधिकारी सदस्य तथा भारी संख्या में उपस्थित होकर ऋषि के बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा इंदौर के उपप्रधान श्री गोविंद जी, उपमंत्री डॉ. दक्षदेव गौड़, श्री गणपति वर्मा (पूर्व. डीएसपी), आचार्य संजयदेव जी, श्री श्वेतकेतु वैदिक, डॉ. विनोद अहुलवालिया जी, श्री धर्मेन्द्र धाकड़, श्री दिनेश गुप्ता, श्री अरुण बलदेव जी, डॉ. ए.सी. शर्मा, श्री देवेन्द्र शर्मा, श्रीमती रेणु गुप्ता, श्रीमती अनिता गुप्ता एवं श्रीमती विमला जी आदि। कार्यक्रम के अंत में आर्यसमाज के मंत्री श्री विनोद अहुलवालिया जी ने उपस्थित सभी लोगों का हृदय से धन्यवाद व आभार व्यक्त किया।

संवाददाता : आचार्य याज्ञिक

जशपुर व रायगढ़ जिला में वेद प्रचार एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस सम्पन्न

पंगसुवा (जशपुर)। ग्राम बसन्तपुर पो. पंगसुवा, जिला जशपुर में **दिनांक ५ अक्टूबर १४** को सभा प्रचारक श्री बीरबल आर्य के ब्रह्मत्व में वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजमान के रुप में श्री मनोहर आर्य धर्मपत्नी श्रीमती ललिता, श्री उदयराम आर्य पत्नी श्रीमती मनकुंवर आर्या, श्री जगतसाय धर्मपत्नी श्रीमती करमवती, श्री रोन्हा-श्रीमती सुन्दोबाई, श्री सैनाथ-श्रीमती वृन्दावती, श्री मनोज कुमार, श्री अनिल कुमार, श्री सजनसाय, श्री रामसिंह ने यज्ञ में आहुति प्रदान की।

दिनांक ८ अक्टूबर २०१४ को श्री महीपत आर्य, श्री शोभाराम आर्य कोषाध्यक्ष एवं प्रचारक श्री बीरबल आर्य के सहयोग सम्पन्न हुआ। जिसमें यजमान के रुप में श्री आनन्द राम आर्य धर्मपत्नी श्रीमती राधाबाई आर्या रहे। भजन, उपदेश, सत्संग का कार्यक्रम भी हुआ।

सहयोगी कार्यकर्ता के रुप में कु. सुशीला बाई, कु. गार्गी बाई, श्री कमलसाय आर्य, श्री जगदीश आर्य, श्री धनेश्वर आर्य, लोहरसाय आर्य, श्री मुकेश कुमार आर्य सहित लगभग १०० अधिक आर्यजन उपस्थित रहे।

दिनांक ९ अक्टूबर २०१४ को ग्राम मुड़ाबहला, वि.ख. पत्थलगां, जिला जशपुर में श्री रामनाथ आर्य सभा प्रचारक के ब्रह्मत्व एवं श्री बीरबल आर्य के अथक प्रयास से यज्ञ, भजन व प्रवचन सम्पन्न हुआ। यजमान के रुप में श्री चक्रधर धर्मपत्नी सहित उपस्थित रहे।

दिनांक १८ अक्टूबर २०१४ को श्री चक्रधर की पुत्री जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री विद्याधर आर्य-श्रीमती केन्दीबाई, श्री हीरालाल आर्य-श्रीमती उर्मिला, श्री रतन आर्य-श्रीमती केन्दोबाई, श्री तेराम आर्य-श्रीमती सुकमनी, श्री जगमोहन-श्रीमती शोभावती, श्री मदनमोहन-श्रीमती श्यामवती सहित लगभग १०० से अधिक आर्यजन उपस्थित रहे।

दिनांक २३ अक्टूबर २०१४ को ग्राम पंगसुवा वि.खं. पत्थलगांव, जशपुर में ऋषि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस दीपावली के शुभ अवसर पर श्री महीपतलाल आर्य के ब्रह्मत्व एवं बीरबल आर्य सभा प्रचारक के सहयोग से यज्ञ, सत्संग व उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। यजमान के रुप में श्री शोभाराम आर्य, श्री सुनूराम, श्री जगसाय, श्री जलिन्दराम रहे। साथ में श्री धनेश्वर आर्य, श्री जगरनाथ प्रसाद आर्य, श्री जगदीश आर्य, श्री सुमराम, श्री रामेश्वर आर्य यज्ञ में आहुति दी, उपदेश व प्रवचन हुए।

दिनांक २३-१०-२०१४ को आर्यसमाज मुड़ागांव वि.खं. लैलूंगा, जिला रायगढ़ में ऋषि दयानन्द बलिदान (निर्वाण) दिवस दीपावली के पावन अवसर पर श्री जगबन्धु शास्त्री के ब्रह्मत्व एवं श्री बीरबल आर्य सभा प्रचारक के सहयोग से भारत माता वेद विद्यालय प्रांगण में यज्ञ, भजन, उपदेश का कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हुआ। यजमान के रुप में श्री विजय कुमार आर्य धर्म पत्नी श्री ताराबती आर्या, श्री कविलदेव शास्त्री-श्रीमती विद्यावती आर्या, श्री गणेशराम शास्त्री-श्रीमती गीता आर्या, श्री अशोक आर्य-श्रीमती सुलोचना आर्या उपस्थित रही।

इस अवसर पर सर्वश्री खगेश्वर आर्य, श्री वन्दना आर्य (शिक्षक), कु. प्रियंका आर्या (शिक्षिका), विद्याधर आर्य (शिक्षक), कु. अनुसुईया आर्या, कु. सुशीला आर्या, सत्यानन्द आर्य, टीकमराम आर्य, गोवर्धन आर्य, गुणनिधि आर्य, ओमप्रकाश आर्य, प्रदीप आर्य, जनकराम आर्य, बावनचरण आर्य, घासीराम आर्य, जहरसाय, गंगाप्रसाद आर्य, हरिराम आर्य, बलराम आर्य, लक्ष्मण आर्य, जसराम आर्य, कमल आर्य, राजेश आर्य (प्रबन्धक, महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर), श्रीमती बसन्ती, धोबीराम (सरपंच) का विशेष योगदान रहा। आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से लगभगल २०० आर्यजनों ने आहुति दी।

संवाददाता : बीरबल आर्य, सभा प्रचारक रायगढ़

शिष्टाचार से मनुष्य उन्नति करता है।
अपने सत्कर्मों पर अभिमान मत करो।
अमरता की भावना मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है।
संयम से मनुष्य की आयु बढ़ जाती है।

महासमुन्द जिला व अन्य क्षेत्रों में योग साधना, चिकित्सा शिविर महाभियान सम्पन्न

दुर्ग। विगत उपवेशन में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों ने यह अनुभव किया था कि समय-समय पर सभा द्वारा किए जा रहे प्रचारात्मक प्रयास वेदप्रचार की दिशा में पर्याप्त सफल नहीं हो पा रहे हैं, जबकि युवा निर्माण के प्रयास आर्यवीर दल शिविरों एवं शाखाओं के माध्यम से निरन्तर किए जा रहे हैं। पिछले कई वर्षों से स्थानीय आर्यसमाजों के नियमित कार्यक्रमों के अलावा सभा की ओर से जगह-जगह लगने वाले मेलों में भी वेदप्रचार के प्रशंसनीय प्रयास होते रहते हैं। हजारों की तादाद में वैदिक साहित्यों का वितरण एवं विक्रयण होता है, किन्तु निरन्तर वेदप्रचार की श्रृंखला चल नहीं पाती। इस बात पर एक राय होकर यह निर्णय लिया गया कि छत्तीसगढ़ निवासी स्वामी अशोकानन्द, श्री वासुदेव वेदश्रमी, श्री रघुनाथ वानप्रस्थी एवं श्री चतुर्भुज प्रभृति वेदप्रचारक सभा के पास उपलब्ध है, इसलिए उनका पर्याप्त समय हम ले सकते हैं, इसी योजना के तहत गत १ नवम्बर से व्यापक प्रचार की कार्ययोजना **"योग साधना चिकित्सा व चरित्र निर्माण शिविर"** की एक श्रृंखला चलाई गई, जिसमें हजारों छात्र-छात्राओं को योग के विविध आसनो का प्रशिक्षण दिया गया।

दिनांक १-११-२०१४ से २५-११-२०१४ तक निम्न स्थानों पर योग साधना चिकित्सा एवं चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न हुए :-

दिनांक १-११-२०१४ - को ग्राम बड़ेपंधी में निःशुल्क योग शिक्षा एवं चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया, जिसमें १०० से अधिक लोगों भाग लिया।

दिनांक २-११-२०१४ - ग्राम पसल्दा, अतरल तह. सराईपाली, जिला महासमुन्द में वेदप्रचार एवं शिविर का आयोजन किया गया।

दिनांक ३-११-२०१४ ग्राम छिबर्रा, केलेन्डा में योग शिविर प्रातः एवं ८ से १२ बजे तक चिकित्सा शिविर सम्प्न हुआ।

दिनांक ४-११-२०१४ को ग्राम मनकी में योग चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ।

दिनांक ५-११-२०१४ को भुथीया एवं स्कूल में योग शिविर प्रातः ८ से १ बजे तक चिकित्सा शिविर सम्पन्न।

दिनांक ६-११-२०१४ को ग्राम बरडी में योग शिविर एवं चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ।

दिनांक ७-११-२०१४ को सरस्वती शिशु मंदिर सरायपाली एवं वैदपाली में चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ, जिमसें ५०-६० लोगों लाभप्रद किया।

दिनांक ८-११-२०१४ को शिशु मंदिर बटकी एवं ग्राम केनागांव में योग, साधना एवं चिकित्सा शिविर सम्पन्न।

दिनांक ९-११-२०१४ ग्राम केनागांव में सायं योग शिविर एवं चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ।

दिनांक १०-११-२०१४ को ग्रिंजल हाईस्कूल में चिकित्सा रात्रि ८ से १० बजे तक ग्रामवासियों का शिविर।

दिनांक ११-११-२०१४ को ग्राम साथेर एवं स्कूल में योग शिविर सम्पन्न हुआ।

दिनांक १२-११-२०१४ को ग्राम साथेर में चिकित्सा शिविर सम्पन्न।

दिनांक १३-११-२०१४ प्रचार यात्रा सराईपाली।

दिनांक १५-११-२०१४ को अम्बिकापुर संतहरकेवल हाईस्कूल में योग एवं चिकित्सा शिविर सम्पन्न।

दिनांक १८-११-२०१४ को ग्राम साथेर में योग सिविर एवं वेदप्रचार, यज्ञ, प्रवचन सत्संग का कार्यक्रम हुआ।

दिनांक १९-११-२०१४ को दान में प्राप्त भूमि का भूमि पूजन, यज्ञ सम्पन्न एवं हाईस्कूल, मीडिल स्कूल ग्राम गौरडीह में योग एवं चिकित्सा सम्पन्न।

दिनांक २०-११-२०१४ को ग्राम डूमरपाली व स्कूल में योग शिविर व चिकित्सा शंका-समाधान।

दिनांक २१ व २२-११-२०१४ ग्राम सलखिया गुरुकुल में योग शिविर एवं कराटे आत्मसुरक्षा के उपाय।

दिनांक २३-११-२०१४ को ग्राम भकुरी गांव के हाईस्कूल में योग का कार्यक्रम सम्पन्न।

दिनांक २५-११-२०१४ को आचार्य जी के सान्निध्य में १७ गांव के हाईस्कूल, मिडिल स्कूल के छात्र-छात्राओं व शिक्षकों का संकूल स्तरीय कार्यक्रम एवं समस्त ग्रामवासियों, क्षेत्रीय ग्रामीण जन उपस्थित थे। सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव जी ने विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा व उनके कर्त्तव्यों की जानकारी दी।

आचार्य वृहस्पति जी का उत्कृष्ट सम्मान

मुम्बई। आर्यसमाज सांताक्रूज मुम्बई द्वारा उसके ७९वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ नूआँपाली बरगड़ (उड़ीसा) के सुयोग्य आचार्य वेद, व्याकरण, दर्शन और साहित्य के तलस्पर्शी विद्वान् आचार्य बृहस्पति जी का १५००० हजार रुपये नगद राशि, शॉल, व श्रीफल के द्वारा सम्मान किया गया।

सरकारी नौकरी को तिलाञ्जलि देकर आर्ष परम्परा के अनुसार अध्ययन, अध्यापन में अपने संपूर्ण जीवन को आहूत करने के कारण ही आचार्य जी को यह सम्मान प्रदान किया गया है। समस्त आर्यजगत् व स्नातक मंडल के लिए यह हर्ष और गौरव का विषय है।

इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य तथा अग्निदूत परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं स्वस्थ व दीर्घ जीवन के अनेक शुभकामनाएं।

- निज संवाददाता कार्यालय

ज्ञान गंगा महोत्सव

दिनांक २४ जनवरी से २६ जनवरी २०१५ तक

स्थान : दयानन्द सेवाधाम, अशोक नगर, बिलासपुर

-: आमंत्रित विद्वान् :-

महात्मा भगवान्देव चैतन्य, सुंदरपुर, हि.प्र.

पं. कुलदीप आर्य, बिजनौर उ.प्र.

आचार्य रणवीर आर्य, आर्यसमाज कांसा छ.ग.

पं. जयदेव शास्त्री, पुरोहित, आर्यसमाज, बिलासपुर

-: मुख्य आकर्षण :-

दिनांक : २४ जनवरी २०१५, शनिवार

विशाल शोभा यात्रा, योगाभ्यास एवं शौर्य प्रदर्शन, सामूहिक विवाह संस्कार, चमेलीदेवी छपारिया धर्मार्थ होम्योपैथिक चिकित्सालय का शुभारंभ

दिनांक २५ जनवरी २०१५, रविवार

वैदिक महायज्ञ भजन एवं वेद प्रवचन

दिनांक २६ जनवरी २०१५, सोमवार

महायज्ञ पूर्णाहुति, राष्ट्र चिन्तन, आज की शाम-शहीदों के नाम

- सहयोगी संस्थाएँ -

आर्यसमाज महिला ईकाई, द.शि.स. गोड़पारा, आर्य धर्मशाला न्यास, अशोक नगर बिलासपुर

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन: ०७८८-२३२२२२५

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा को दान में प्राप्त भूमि का भूमि पूजन, दानदाता का सम्मान एवं महासमुन्द जिले के अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में योग, साधना एवं चिकित्सा शिविर की झलकियां

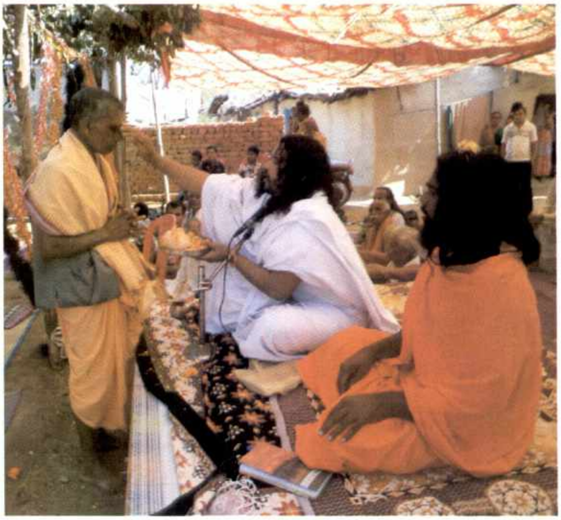

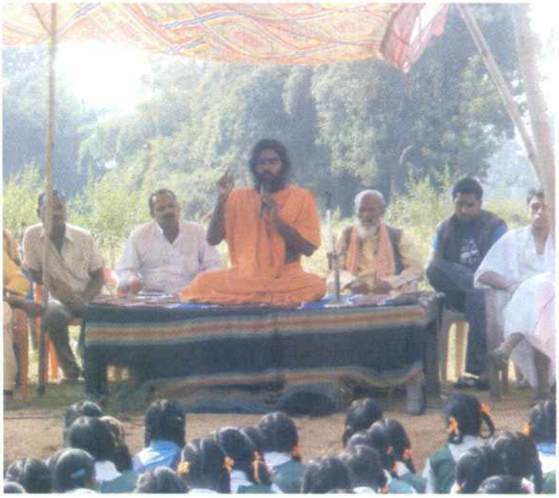

जनवरी 2015
CHH-HIN/2006/17407

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,
श्रीमान्

आर्यसमाज से.-6, भिलाई में सम्पन्न 55वाँ वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.